Annual Subscription Rs. 100/- ओ३म् 12th April 2013

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

प्रो. विठ्ठलराव आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री निर्वाचित

दिल्ली : १४ अप्रैल २०१३ के दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दयानंद भवन में आहूत की गई सार्वदेशिक सभा की अंतरंग सभा की बैठक में सभा के पूर्वमंत्री प्रो. कैलाशनाथ सिंहजी के देहावसान से रिक्त महामंत्री पद पर सर्व सम्मति से प्रो. विठ्ठलराव आर्य (हैदराबाद) को महामंत्री निर्वाचित किया गया। सारे सदन ने इस प्रस्ताव का करतल ध्वनि से स्वागत किया और अनुमोदन किया और आशा व्यक्त की गई कि श्री विठ्ठलराव आर्य के महामंत्रित्व काल में समाज का संगठन सशक्त होकर देश-विदेश में व्यापक रूप से फैलेगा। इसी प्रकार से रिक्त कोषाध्यक्ष पद पर उत्तराखंड की प्रतिनिधि श्रीमती इन्दू बालाजी को सर्व सम्मति से निर्वाचित किया गया। अंतरंग अधिवेशन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेशजी ने की।

कैसे मनाएँ आर्यसमाज स्थापना दिवस?

—स्वामी अग्निवेश

११ अप्रैल, २०१३ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा। नया विक्रमी सम्वत् २०७० और आर्यसमाज का स्थापना दिवस। क्या यह सब आपको स्मरण है? आज की युवा पीढ़ी जनवरी फरवरी जानती व मानती है अतः चैत्र–वैशाख और शुक्ल–कृष्ण पक्ष से उसका क्या लेना–देना? नर्सरी से सीनियर सैकंड्री और बी. ए. से एम.ए. तक की इतिहास पुस्तकों में जब कहीं विक्रमादित्य है ही नहीं तो उसका जिक्र कौन करना चाहेगा? जब ईस्वी सम्वत् का ही प्रचलन है तो विक्रमी सम्वत् जानने का लाभ क्या होगा? और हम आर्य समाजियों के लिए आर्यसमाज स्थापना दिवस का औचित्य क्या है इस पर भी तनिक विचार करते चलें।

आर्यसमाज स्थापना दिवस को हम स्मरण भी करें तो किस हैसियत से क्योंकि किसी की कोई हैसियत तो आर्यसमाज में आज रह ही नहीं गई है। अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयास करते हैं तो हमारी चेतना लौटती है और हम उन पर भड़क उठते हैं राष्ट्रीयता के नाम पर, स्वाभिमान के नाम पर, मानवता के नाम पर, एकता व संस्कृति के नाम पर। कैसा मज़ाक है यह सब?

हम एकेश्वरवाद को मानते हैं लेकिन आचार, विचार और भावना के स्तर पर जातिवाद से मुक्त नहीं हो पाते, ऊँच–नीच की भावना से ऊपर नहीं उठ पाते, अस्पृश्यता को त्याग नहीं पाते, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के भेदभाव को नष्ट नहीं कर पाते, लिंग भेद, नस्ल भेद, भाषा व क्षेत्र भेद की दीवारों को ढाह नहीं पाते। ऐसी एकेश्वरवादी, मानवतावादी, भ्रातत्व और समरसता की भावना के चलते आर्य समाज स्थापना दिवस को हम स्मरण भी करें तो उसका अर्थ क्या निकलता है? नहीं बनता कि आज़ादी को निगलने वाली पूँजीवादी व्यवस्था को ललकारें, लोकतन्त्र के नाम पर फल–फूल रही निरंकुशता को चुनौती दे, प्रगति के नाम पर पाँव पसार रही बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बहिष्कार करे और समाजवाद के नाम पर पनप रहे व्यक्तिवाद को नकारे? यदि उसे ये अधिकार प्राप्त नहीं है या उन अधिकारों का प्रयोग करना हम भूल चुके हैं तो आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाने का औचित्य क्या रहेगा?

आर्यसमाज ने वेदों का शंखनाद किया लेकिन कुरआन, पुराण, बाईबिल का आज भी बोलबाला है। आर्यसमाज ने मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, श्राद्ध–तर्पण, अवतारवाद, चमत्कार, फलित ज्योतिष, भाग्यवाद, गुरुडम और अन्धविश्वास का विरोध किया लेकिन वह पूरे जोर–शोर से मीडिया

एशिया–अफ्रीका, यूरोप व अमेरीका महाद्वीपों में आर्यसमाज रूपी ज्ञानाग्नि के प्रचण्ड होने की जो भविष्यवाणी एण्ड्रूज जैक्सन ने कभी की थी क्या वह भविष्यवाणी इस कारण कभी सत्य नहीं होगी कि आर्यसमाज फलित ज्योतिष में विश्वास नहीं रखता? जो अग्नि देश में ही ठण्डी होकर रह गई वह भला इन महाद्वीपों में क्योंकर प्रज्ज्वलित हो सकेगी? भारत को ही लें तो पूर्वांचल में हम कहीं नहीं हैं, कश्मीर व केरल में भी हमारा अस्तित्व कितना है? और जहाँ हम हैं वहाँ विभाजित हैं, बँटे हुए हैं, एक दूसरे से कटे हुए हैं। आपस की फूट महाभारत का कारण बनी जिस पर ऋषिवर दयानन्द ने बार–बार धिक्कारा, आक्रोश जताया, नसीहत दी लेकिन यह सब कुछ आर्यसमाज के काम नहीं आया। वह खुद फूट

Date: 12-04-2013

लाहौर डायरी

- अनिल

२१ सितंबर, २०१२

अटारी सीमा

२० सितंबर की भोर, मैं जब दिल्ली से अमृतसर के लिए रवाना हुआ, तो एफडीआई और डीजल की कीमतों में बढोत्तरी के खिलाफ सर्वदलीय भारत-बंद शुरू हो चुका था। शाम में अमृतसर पहुँचने पर मुझे टेलिविजन के ज़रिए खबर हुई कि भारत बंद का असर सीमित ही रहा। उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में ज्यादा असर देखा गया, जहाँ छिटपुट वारदातें हुईं। जबकि दिल्ली, मुंबई और चेन्नई जैसे शहरों में कोई खास असर नहीं देखा गया। सारी राजनीतिक पार्टियों की एकजुटता को जेखते हुए मुझे बंद के काफी हंगामेदार होने की आशंका थी, लेकिन सरकार के कान में जूँ रेंगते हुए नहीं देखी गई। बंद खत्म होने पर शाम में टीवी की बहसों से मुझे लगा, जैसे सरकार समेत विपक्षी दलों ने एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर खानापूर्ति कर राहत की साँस ली हो।

अमृतसर से सरहद की ओर जाने वाले रास्ते से गुज़रते हुए एक स्पष्ट तस्वीर के साथ यब अहसास तेज़तर होता चला जाता है कि सरहद के इर्द-गिर्द दुश्मनी की संगीनें अभी तनी हुई हैं। वाघा सीमा पर भारतीय इलाके में हाल ही में एक नया टर्मिनल बना है, जो पुराने प्रवेश द्वार से तकरीबन एक-डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हमारे साथी राजेश्वर इससे पहले सन २००५ में दिल्ली से मुल्तान तक एक शांति मार्च में पैदल शिरकत कर चुके हैं। सो उन्हें मालूम है कि किधर से आना-जाना है।

रास्तेभर हमें यह फिक्र सताती रही कि नई दिल्ली स्थित भारत के गृहमंत्रालय के अगर पैदल सीमा पर करने की अनुमति वाला आदेश यहाँ सीमा पर तैनात अधिकारियों के पास नहीं पहुँचा होगा, तो हमें अमृतसर वापस लौटना पड़ेगा। प्रवेश द्वार पर पहली इंट्री रजिस्टर में पता वगैरह दर्ज करने के बाद जब हम चेकपोस्ट टर्मिनल के भीतर पहुँचे, तो सबसे पहले गृह-मंत्रालय के स्वीकृति पत्र के बारे मे आश्वस्त होना चाहते थे। इमिग्रेशन के अक अधिकारी ने हमें देखते ही पूछताछ शुरू कर दी। कहाँ, कैसे, किसके यहाँ और किस लिए जाना है... वगैरह, वगैरह। जब उन्हें तफसील से हमने ब्यौरा दिया, कि हम लोगों को वीज़ा के मसले पर एक सम्मेलन में भागीदारी करने के लिए लाहौर जाना है, और यह कि हमें पैदल सीमा पार करनी है, तो उन महाशय ने हमें अपने चेंबर में बुलाया। बैठने के इशारा करते हुए उन्होंने हरेक व्यक्ति के पेशे और पृष्ठभूमि के बारे में पूछताछ की और हमें बताया कि गृहमंत्रालय का संबंधित आदेश अभी तक नहीं मिला है। राजेश्वर उन्हें बताते हैं कि दिल्ली में गृहमंत्रालय के अधिकारियों ने उनसे तीन दिन पहले ही वादा किया था कि हमारे पैदल सीमा पार करने का आदेश ई-मेल या फैक्स के ज़रिए तत्काल इमिग्रेशन के अधिकारियों को भेज देंगे। इस पर वो अधिकारी कहते हैं कि वो तो अभी दिल्ली फोन कर 'कन्फर्म' कर लेंगे। तकरीबन आधे घंटे तक हमसे तफसील से पूछताछ करने के बाद वो अधिकारी कुर्सी से उठकर बाहर जाते हैं। चंद मिनटों में वापस आकर वे बताते हैं कि उन्होंने दिल्ली फोन कर कन्फर्म कर लिया है और बताते हैं कि हमें पैदल सीमा पार करने की अनुमति मिल गई है।

चेकपोस्ट टर्मिनल के एक बड़े हॉल में कई काउंटर सजे हुए हैं। एक-दो काउंटरों पर अधिकारी बैठे हैं, बाकी वीरान पड़े हैं। लगता है कि यहाँ से सीमा पार आने-जाने वालों की तादाद काफी कम होती है। एक नज़र में यहाँ का माहौल काफी तसल्लीबख्श लगता है, लेकिन थोड़ी देर की बातचीत के बाद हमें अहसास होता है कि 'राष्ट्र' की असल शक्ल यहाँ आबाद विचारों से बनती है। हम एक काउंटर पर पासपोर्ट और इंट्री संबंधी जानकारियाँ दर्ज कराने जाते हैं। इस काउंटर पर जो साहब बैठे हैं, उनके भाषाई लहजे और पहनावे से लगता है कि वे पंजाबी कौम से ताल्लुक रखते हैं।वे अनमने ढंग से हमारा पता वगैरह दर्ज कर रहे हैं औरं बीच-बीच में हमारे पेशे और निवास के बारे में पूछताछ करते हैं। फिर एक नज़र उठाकर सवाल दागते हैं। 'क्या होगा ये शांति-फाँति के कांफ्रेंस से? एक ही साँस में वे कहते हैं, 'अभी अखबारों में देखा नहीं आपने कि जम्मू-कश्मीर एक खुफिया सुरंग मिली है एक तरफ दोस्ती का हाथ और दूसरी तरफ से...' वे आगे कहते हैं, 'आप लोगों की इन कवायदों से हमें क्या हासिल होगा? हम लोग लगभग एक साथ उन्हें अपनी लाहौर यात्रा का महत्व बताते हैं। 'सर दोनों मुल्कों की आवाम देखिए, दोस्ती और अमन चाहती है और आने वाली पीढ़ियों के लिए बहुत ज़रूरी है कि आपस की गलतफहमियाँ दूर हों। हमें अपने परसेप्शन में तब्दीली लानी चाहिए। मैंने कहा, 'सर माडिया की ही बातों का एकदम से यकीन कर लेना मेरे लिए तो मुश्किल है, और मैने आपको बताया भी है कि मैं भारत-पाक रिश्तों में मीड़िया की भूमिका पर 'रिसर्च' कर रहा हूँ।' मेरी बात काटते हुए उस महाशय ने कहा, 'अरे आने वाली पीढ़ियों की बात छोड़िए, हम स्तब्ध रह गए। आखिरकार, अभी भी हुक्मरानों के अड़ियल और कुराग्रहपूर्ण रवैये, आवाम के बीच देस्ती और भाईचारे की कोशिशों पर भारी पड़ते हैं।

मैंने अपने नागरिक ज़ेहन को सहेजते हुए उनसे पूछा, 'ये आपके निजी विचार हैं या ऑफिशियल? नहीं। नहीं।ये तो मेरे अपने विचार हैं। हेठी से उन्होंने कहा। हमने शुक्रिया कहा, और उनसे विदा ली।

पीछे मुड़कर मैने देखा कि हमारे अन्य साथी थोड़ी दूरी पर एक-एक अधिकारी से बातचीत कर रहे थे। ये महाशय कह रहे थे, 'हमने सन ६५ में 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' का दर्जा दिया, लेकिन नतीजा... ? हमने अपनी राय का इज़हार किया।'साहब देखिए, दोस्ती का नतीजा निकलता है। ताल्लुकात बेहतर होते हैं, और हमें महसूस होता है कि हम अच्छे पड़ोसियों की तरह झगड़ा-झंझट किये बगैर मिल-जुलकर रह सकते हैं।' जाते-जाते उस अधिकारी ने कहा, 'यह तो हम पिछले पैंसठ सालों से देख रहे हैं।' दोनों

अधिकारियों के मुँह से लगभग एक ही बात सुनके मुझे यकीन हो गया कि इनके ऐसे दुराग्रही विचार 'ऑफिशियल वर्जन' के ही नमूने हैं।

आगे कस्टम के अधिकारी, लगा जैसे हमारी राह देख रहे हों। अपने सामानों की चेकिंग कराने के बाद हम टर्मिनल के उस पार खड़ी बस में सवार हो गए, जो हमें पाकिस्तान सीमा तक ले जाएगी। शिरीष भाई चुटकी लेते हैं, चलो, इतनी दुश्वारियों के बाद वीजा फीस का कुछ तो फायदा हुआ, ये बस हमें एकाध किलोमीटर तक छोड़ने जा रही है।'

वाघा (पाकिस्तान की सीमा)

भारत की सीमा के ठीक सामने तकरीबन एक-डेढ़ मीटर की जगह छोड़ पाकिस्तान का लोहे का दरवाजा है। पंद्रह-बीस मीटर की दूरी पर एक बड़ा प्रवेश द्वार है, जहाँ जिन्ना की तस्वीर के साथ उर्दू में लिखा है- बाबा-ए-आजादी, यानी आज़ादी के स्तंभ। दोनों ओर लोहे के दरवाज़ों और स्तंभ द्वार के बीच अपने-अपने देश के झंडे के रंग की सीढ़ीदार कुर्सियाँ लगी हुई हैं। यह एंपिथिएटर नुमा जगह है। कुर्सियाँ साम के वक्त सीमा पर होने वाले सेरेमॉनियल परेड के तमाशबीनों के लिए बनाई गई हैं। यहाँ, सन १९५९ से हर रोज गाजे-बाजे के साथ 'राष्ट्रवाद' की नुमाइश में फौजी श्रेष्ठताबोध का प्रदर्शन किया जाता है। मुझे दोनों मुल्कों के अमन पसंद नागरिकों की कई सालों से की जा रही वो माँग याद आती है, जिसमें वो इस फिजूल खर्ची और बेकार की कवायद को बंद कर, गरीबी और रोज़गार जैसे मसलों को हल करने का अह्वान करते हैं।

हम अभी काफी अच्छा महसूस कर रहे हैं। आज भगत सिंह के शहर लाहौर जो पहुँच जाएंगे। मैं स्तंभद्वार को पृष्ठभूमि में रखते हुए सैनिकों के साथ अपने साथियों की तस्वीरें उतार रहा हूँ। हँसते-मुस्कुराते हम पाकिस्तान की जमीन पर कब पहुँच गए, पता ही नहीं चलता। सरहद पार जाते ही वक्त आधा घंटा पीछे चला गया। सरहद के आर-पार दोनों मुल्कों के सैनिक एक जैसे हैं। वे दूर-दराज़ के इलाकों से आने वाले किसान के बेटे जैसे लगते हैं। बस, पहनावे के रंग का फर्क है, वरना कौन सैनिक किस मुल्क का है, चाल-ढाल और रंग से जानना मुश्किल है। पाकिस्तान की ज़मीन पर कदम रखते हुए मैं पलटकर भारत की सरहद को देखता हूँ। सामने भारत के स्तंभ द्वार पर गाँधी की हँसती हुई तस्वीर लगी है। बगल में एक बोर्ड पर लिखा है- 'भारत दुनिया का विशालतम लोकतंत्र है।' मैं मंटो के टोबा टेक सिंह को तलाशता हूँ। दोनों मुल्कों के लोहे के दरवाज़ों के बीच एक सफेद रेखा है। तकरीबन आधा फुट की एक चौड़ी सफेद रेखा दोनों मुल्कों को अलग करती हैं, लेकिन मुझे महसूस होता है कि मनोवैज्ञानिक तौर पर ये दोनों मुल्क एक-दूसरे से कितने दूर हो गए हैं। एक मायने में दोनों मुल्क दुनियाभर में अपवाद हैं, जहाँ किसी नो मैन्स लैंड' का कोई अस्तित्व नहीं है और कोई वास्तविक सरहद नहीं, सिर्फ नियंत्रण रेखा है। मैं हैरान हूँ। सोचता हूँ इन मुल्कों ने अपनी सरहदों को कितना चौड़ा करने की कोशिश की है, कि यहाँ एक मुल्क की सीमा खत्म होती है, ठीक वहीं से दूसरा मुल्क शुरू हो जाता है। इन दोनों मुल्कों की कहीं कोई साझी ज़मीन नहीं बची है, जहाँ ये मुल्क एक-दूसरे को इज़्ज़त और गरिमा की नज़र से देखते हों, साझेपन में जीते हों।इस सफेद रेखा के आर-पार तैनात बंदूकों, कंटीले तार के बाड़ों, फौजी ताम-झामों से ही सरहद की वास्तविक तस्वीर बनती है। और मुझे मंटो की कहानी टोबा-टेक सिंह के बिसन सिंह की बेतरह याद आ रही है, जो सरहद के ऐसे बंटवारे को कभी स्वीकार नहीं कर पाता। बिसन सिंह की बेतरह याद आ रही है, जो सरहद के ऐसे बंटवारे को कभी स्वीकार नहीं कर पाता। बिसन सिंह के जेहन में ऐसी नियंत्रण रेखा वाले मुल्क नहीं, एक मुखलतिफ जगह है, जिसे वो टोबा टेक सिंह कहता है। बिसन सिंह की टीस मुझे सताती है। मैं सोचता हूँ, हम दोनों ही मुल्कों को टोबा टेक सिंह नामक जगह का कत्तई कोई खयाल नहीं है। क्या दुनिया का विशालतम लोकतंत्र 'बिसन सिंहकी त्रासदीपूर्ण मौत के लिए जिम्मेदार नहीं है?

थोड़ी दूर पैदल चलकर हम पाकिस्तान के टर्मिनल में दाखिल हुए। इमिग्रेशन और कस्टम के अधिकारियों ने 'सलाम-वाल-कुम' से हमारा स्वागत किया। हमने जवाब दिया 'सलाम', नमस्ते।' वे मुस्कुरा दिए। भारत के इमिग्रेशन अधिकारियों के अड़ियल और विद्रूप नौकरशहाने रवैये का सामना करने के बाद अगर हमसे अब कोई ढिठाई से पेश आता है, तो हमें अब और बुरा न लगता। लेकिन पाकिस्तान के अधिकारियों का उत्साहपूर्ण व्यवहार हमारे लिए बिल्कुल अनपेक्षित था। उन्होंने हमसे कोई अपमानजनक पूछताछ नहीं की। हमारी मेजबान सईदादीप ने उन्हें सुबह ही फोन कर कह रखा था कि भारत से उनके मेहमानों का एक दल आ रहा है, तो उन्होंने हमारे आगमन को खुशनुमाई की तरह लिया। अलबत्ता हमारे पहुँचते ही इमिग्रेशन के अधिकारी ने हमें इत्तला दी कि आज समूचा पाकिस्तान बंद है, इसलए सारे देश की मोबाइल सेवा बंद कर दी गई है। फिर उन्होंने बताया कि अभी-अभी दफ्तर में सईदा दीप का फोन आया था कि वे हमें लेने के लिए लाहौर से निकल रही हैं, और तकरीबन आधे घंटे में पहुँच जाएगी।

हम सईदा का इंतज़ार कर रहे थे। एक अधिकारी ने हमें बताया कि बंद के कारण टैक्सी और ऑटो रिक्षा वगरह पूरी तरह बंद होंगे और दोपहर एक बजे की नमाज के बाद तो निजी वाहन भी ब-मुश्किल ही चलेंगे। हम अपने मोबाइल का नेटवर्क चेक करते हैं। रवि के मोबाइल फोन पर भारत की किसी मोबाइल कंपनी का नेटवर्क अभी तक कायम है। वे खूब खुश हो रहे हैं। इमिग्रेशन के एक अधिकारी हमारे पास आए और अनौपचारिक तौर से हाल-चाल और मज़हब के बारे में पूछने लगे। मैंने उन्हें बताया कि मैं किसी धर्म में यकीन नहीं रखता, तो उनके लिए हैरानी वाली बात थी। उन्होंने कहा, कोई-न-कोई मज़हब होगा ही? उनकी इस जिद से मुझे बनारस का एक वाकया याद आया। हम दोस्त लोग बनारस में जब अपने जातिसूचक नाम बताना पसंद नहीं करते थे, तो कुछ लोक कुरेदकर पूछते, आगे... ? हम हँसते, और कहते कि अगर आपकी दिलचस्पी जाति जानने में है, तो हम आपको बता दें कि हम जातीय पहचान में यकीन नहीं करते। वे हिकारत भाव से कहते, 'ऐसा कैसे हो सकता है। कोई न कोई जाति तो होगी ही? तो सीमा पर पाकिस्तान इमग्रेशन के उन अधिकारी से अपनी बात को स्पष्ट करते हुए जब मैने कहा, कि मेरे लिए इन्सान और इन्सानियत ही असली चीज है। और सारे ही धर्म इंसानी मजबूरियों और कमजोरियों के लिए भक्ति और आस्था की चादर बुनते हैं और संस्थानिक तौर पर हमेशा उनकी साँठ-गाँठ रियासत

और ताकतवरों के साथ रही है, तो वे इसे स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। हालाँकि धार्मिक दर्शन की प्रामाणिकता साबित करने के क्रम में उनके कई बे बुनियाद तर्कों के बावजूद इंसानियत के मसले पर उनसे काफी दिलचस्प बात हुई। थोड़ी देर में सईदा दी हमें 'रिसीव' करने के लिए काफी अफसोस जाहिर किया। उन्होंने कई बार सॉरी कहा, फिर इमिग्रेशन के एक अधिकारी से पूछा कि उन्होंने मेहमानों को चाय पिलाई या नहीं ? अधिकारी चाय का इंतजाम करने के लिए जाने लगे। हमने उन्हें बताया कि चाय की कोई जरूरत नहीं थी। हम तो उनके खुश मिजाज़ और मित्रतापूर्ण व्यवहार से ही बहुत प्रभावी हुए। सलाम-दुआ के बाद हम लाहौर केलि टर्मिनल से बाहर आ गए।

रास्ते में हम सईदा दी से इमिग्रेशन अधिकारियों के अदब की चर्चा करने लगे। उन्होंने हमें एक दिलचस्प बात बताई। उन्होंने कहा कि अभी ये थोड़ा रेस्पेक्ट करने लगे हैं, वरना पहले तो खूब लाठियाँ, डंडे भाँजे हैं। अपमानित किया है। क्योंकि पिछले २० साल से लगातार हम लोग अमन और दोस्ती की कोशिश करते हुए फिज़ूल की सैन्य कवायदों के खिलाफ सीमा पर प्रदर्शन कर रहे हैं। सीमा पर ये जो रोज़ाना 'सेरेमोनियल परेड' करते है, उसे बंद करने की माँग करते हुए प्रदर्शन किये हैं। १४-१५ अगस्त को हम सब लोग संयुक्त आज़ादी दिवस मनाते हैं। तो अब इन्हें धीरे-धीरे लगने लगा है कि दुश्मनाना रवैया बेकार है और कि हमारी कोशिशें वास्तविक हैं।

पाकिस्तान सीमा से चार-पाँच किलोमीटर की दूरी पर लाहौर शहर को जाने वाली सबसे बड़ी सड़क 'कनाल रोड' शुरू हो जाती है। रावी नदी पर भारत के पंजाब सूबे में बने बाँध से निकलने वाली यह नहर ,ड़क के लिए चौड़े डिवाइडर, जैसी है। सड़क पर वाहन काफी कम नज़र आ रहे हैं। आने-जाने वाले लोग बहुत जल्दी में लग रहे हैं, जैसे समय से पहले अपनी मंजिल तक पहुँचना चाहते हैं। नहर और सड़क के किनारे काफी पेड़ हैं। हरियाली है। नहर का पानी मटमैला है और जगह-जगह पर बच्चे नहर में छलाँग मार तैर रहे हैं। कनाल रोड से जब हम एक बड़े चौराहे से एक दूसरी सड़क पर जाने लगे, तो रास्ते में जगह-जगह उर्दू में बैनर लगे हुए थे। मैं अटक-अटक कर पढ़ रहा था। 'हरमत रसूल के लिए जान भी कुर्बान है।' सईदा आपा कहती हैं, 'ये अपनी जान के बजाय औरों की जान कुर्बान करते हैं। उन्होंने बताया कि अमेरिका में बनी इस्लाम बिरोधी फिल्म के खिलाफ आज जुमे की नमाज के बाद धार्मिक उग्रवादी संगठनों ने समूचे पाकिस्तान में बंद का अहवान किया है और सबसे अफसोसजनक बात यह है कि सरकार ने आज पैगंबर के सम्मान में सार्वजनिक छुट्टी की घोषणा कर दी है, जिससे इन कट्टरपंथी ताकतों को खुलकर हिंसा और आगजनी करने का मौका मिल जाएगा। एक और दिलचस्प बात सईदा दी ने बताई कि जहाँ-जहाँ उग्रवादी संगठनों ने हिंसा भड़काने वाले बैनर और पोस्टर लगाए हैं, वहाँ-वहाँ धर्म-निरपेक्ष और प्रगतिशील सिविल सोसाइटी संगठन इंस्टीट्यूट ऑफ पीस एंड सेक्युलर स्टडीज ने शांति और सौहार्द की अपील करते हुए बैनर लगाए हैं। यह वाकई एक जोखिम भरी और हिम्मत वाली पहल है, क्योंकि कट्टरपंथी ताकतें अपनी किसी भी आलोचना पर जानलेवा हमले तक करने में कोई गुरेज नहीं करती हैं। धार्मिक उन्माद और अंधी नफरत की लहर के बीच धर्मनिरपेक्षता और सहिष्णुता का पैगाम देने वाली ऐसी पहल पाकिस्तानी समाज में मौजूद महत्वपूर्ण फाखों को भी रेखांकित करती है।

हम एक होटल आ गए। सईदा दी को कल के कार्यक्रम की तैयारियों के अलावा हमारे पासपोर्ट वगैरह लेकर पुलिस थाने में रिपोर्ट देनी थी। हमारे वीजे में हमें पुलिस रिपोर्टिंग करने की छूट नहीं मिली थी, सो वह हमें ठहराकर जल्दी ही चली गईं। जाते -जाते होटल के अधिकारियों को उन्होंने कहा, ये इंडिया से हमारे खास मेहमान आये हैं, इनका अच्छे से खयाल रखना।

सईदा दी से मेरी मुलाकात एक बार इलाहाबाद में हुई है। पिछले दिसंबर-जनवरी में पाकिस्तान-इंडिया पीपुल्स फोरम फॉर पीस एंड डेमोक्रेसी के बहु-प्रतीक्षित संयुक्त अधवेशन का आयोजन इलाहाबाद में हुआ था। तब पाकिस्तान से तकरीबन २५० लोगों का एक डेलीगेशन इलाहाबाद आया था। वह संदीपजी ने सईदा दी से मेरा परिचय यह कहते हुए करवाया था कि इन्हें अपने रीसर्च के सिलसिले में पाकिस्तान विजिट करना है। सईदा दी ने मुझसे वादा किया था कि वो मेरे पाकिस्तान यात्रा के लिए पूरी कोशिश करेंगे। तो इस बार जब उन्हें हाल ही में भारत और पाकिस्तान के बीच हुआ 'लिबरल वीजा पैक्ट' पर एक सम्मेलन का आयोजन करना था, तो संदीपजी ने मेरा भी नाम सुझाया। जुलाई से सितंबर के बीच वीजा क्लियरेंस न मिल पाने के कारण सम्मेलन की तारीख दो बार आगे बढ़ानी पड़ी, लेकिन सईदी दी की कोशिशें कामियाब हुई और अंततः हमें १५ दिनों का वीजा मिल गया।

होटल के कमरों में दाखिल होते ही हमने टेलीविजन स्वीच ऑन किया। रास्ते में सईदा आपा ने हमें बताया था कि यहाँ भारत के कई चैनल 'ऑन एयर' होते हैं। मैंने सोचा कि शायद समाचार-चैनल भी दिखाई जाते हों, लेकिन ऐसा नहीं था। यहाँ कलर्स, स्टार प्लस के अलावा कई सीरियल चैनल तो ऑन एयर होते हैं, लेकिन न्यूज आइटम पाकिस्तानी चैनल के जरिए ही आते हैं। बहरहाल, ये दोपहर कई एक - डेढ़ का वक्त रहा होगा। न्यूज चैनलों में पाकिस्तान और मोबाइल सेवा बंद होने की खबर बार-बार फ्लैश में चलाई जी रही थी। कराची, इस्लामाबाद, पेशावर, रावलपिंडी जैसे शहरों से विभिन्न संवाददाता बता रहे थे कि अभी जुमे की नमाज़ खत्म होने के बाद पैगम्बर मोहम्मद पर बनी अपमानजनक फिल्म के खिलाफ बड़ी रैलियाँ और प्रदर्शन का आयोजन किया जाएगा, और किसी भी तरह की हिंसा से निपटने के लिए पुलिस का भारी बंदोबस्त किया गया है। पंजाब रेंजर्स के अलावा सेना की टुकड़ियाँ भी तैनात की गई हैं।

समाचार-चैनल देखते-ही-देखते आगजनी, हिंसा और लूट-पाट की खबरें देने लगें। रावलपिंडी से 'ब्रेकिंग न्यूज' थी कि पुलिस ने हिंसा पर काबू पाने के लिए आँसू गैस का इस्तेमाल किया है। और कई गाउंड गोलियाँ चलाई हैं, जिसमें एक न्यूज चैनल का एक रिपोर्टर मारा गया है। इस तरह, कराची और इस्लामाबाद में नमाज के बाद संगठित भीड़ कूटनीतिक प्रतिष्ठानों की ओर कूच कर रही थी, जिसमें अमेरिका और इज़रायल के दूतावास प्रमुख थे। पंजाब रेंजर्स और सेना की टुकड़ियाँ अराजक और

उग्र भीड़ को नियंत्रित करने के लिए जहाँ-तहाँ कुछ कोशिशें कर रही थी, लेकिन प्रदर्शन की लहर इतनी मज़बूत थी कि हिंसा की आगजनी पर काबू नहीं पाया जा सका। सारे ही समाचार चैनल मुखतलीफ शहरों से प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच जारी झड़प का 'लाइव' प्रसारण कर रहे थे, और कई समाचार चैनल 'जंग जैसे हालात' का विस्तृत ब्यौरा दे रहे थे। शाम घिरने तक पुलिस के चार जवानों सहित कुल २३ लोगों के मारे जाने और सैंकड़ों को गंभीर तौर से घायल होने की खबरें आ रही थीं। कराची और इस्लामाबाद में सबसे ज्यादा जान-माल का नुकसान हुआ। इन शहरों में जगह-जगह पर आगजनी की गई, कई सिनेमा हॉल फूँक दिये गये। मॉल-बैंक और शराब की दुकानें लूट ली गई। (चैनलों के अनुसार, प्रदर्शनकारी शराब की दुकानों, तोड़-फोड़ करते हुए, सबसे पहले शराब की बोतलें लूटकर अपने साथ ले गए। अल्पसंख्यकों के धार्मिक प्रतिष्ठानों में तोड़-फोड़ की गई। अंधेरा घिर आने तक उपद्रवी भीड़ और पुलिस बल के बीच मुठभेड़ें जारी रही। कुलमिलाकर, तकरीबन आठ घंटे तक सारे ही शहर धार्मिक उन्मादी संगठनों के कब्जे में रहे, और अल्लाह के सम्मान 'प्रदर्शन' में इन्सानी समाज की कई खूबसूरत उपलब्धियों को चंद मिनटों में तहस-नहस कर दिया गया।

रात में, समाचार चैनलों पर प्राइमटाइम बहस में विपक्षी राजनीति पार्टियों के नेता सरकार की बेवसी को ज़िम्मेदार ठहराते रहे, सरकार के मंत्रिगण और प्रवक्ता मीडिया के लाइव कवरेज और विपक्षी दलों का रोना रोते रहे। जबकि हकीकत ये थी कि सारे ही राजनीतिक दलों ने इस बंद का समर्थन किया था और सरकार ने तो सार्वजनिक छुट्टी की घोषणा कर दी थी। राजनीतिक दलों की रणनीति ये थी कि किसी बड़े नेता ने, जैसे इमरान खान या नवाज़ शरीफ ने विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व नहीं किया, पीछे से समर्थन दिया, लेकिन जब स्थितियाँ खतरनाक बिंदु पर पहुँच गई, तो इन्होंने काबू करने की कोई कोसिशें भी नहीं की। कुछ मीडिया चैनलों और सिविल सोसाइटी के एक मजबूत घड़े ने सरकार, विपक्षी दलों और कट्टर दक्षिण पंथी संगठनों, सभी को सवालों के कटघरे में खड़ा किया। उन्होंने कहा कि इन शहरों में इन्होंने (धार्मिक उग्रवादी संगठनों ने) इस्लाम के नाम पर जो कुछ किया है, वह इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं के खिलाफ है और इससे समूची इंसानियत शर्मसार हुई है। बल्कि सोशल मीडिया पर हिंसा, आगजनी और मार-काट के खिलाफ एक चोटा, लेकिन काफी मज़बूत अभियान चल रहा था। उम्मीद जिंदा थी कि शायद, उन्माद के इस विनाशकारी तूफान के गुज़र जाने के बाद लोग नए सिरे से सोचेंगे।

रात में आठ-नौ बजे के आस-पास हम कमरे से बाहर निकले, होटल के एक सुरक्षा कर्मी ने हमें सुझाया कि हम कहीं बाहर न निकलें। लाहौर का माहौल हालाँकि अभी 'सामान्य' था, लेकिन उस सुरक्षा कर्मी ने हमें इसलिए भी बाहर जाने से रोका, क्योंकि हम भारत से आए हैं। हमें कुछ दवाइयाँ और सिगरेट चाहिए थी, तो उन्होंने खुद मंगानी की जिम्मेदारी ले ली। असल में दोपहर से ही हम कमरे में जैसे कैद हो गए थे, इसलिए हमें बाहर खुली हवा में साँस लेनी थी। होटल के सामने ही सड़क पर हम टहलने लगे, तो उन सुरक्षा कर्मी से थोड़ी विस्तार से बातचीत हुई। उन्होंने अपना नाम 'नईम मसीह' बताया। और साथ में यह भी कि वो ईसाई हैं। मैंने पूछा कि उन्होंने अपना पहला नाम 'मुसलमान' क्यों रखा? तो उन्होंने इसे महज़ 'रिवाज़' का असर बताया। मैंने उनसे पूछा कि क्या यहाँ भी ईसाइयों पर हमले होते हैं? वे मेरे करीब आए, लगभग फुसफुसाते हुए बोले, 'वैसे तो नहीं होते, लेकिन बड़े भाई लोग कभी-कभार कर देते हैं। उनके बताने के अंदाज़ से अल्पसंख्यक समुदाय की असुरक्षा, खौफ और पीड़ा के समवेत स्वर को पहचाना जा सकता था। रात १० बजे के आस-पास सईदा दी का फोन आया। उन्होंने कहा कि अगर हमारी कहीं बाहर घूमने की चाहत है, तो आज थोड़ा मुश्किल है। लेकिन हम कल के कांफ्रेंस हॉल की सजावट के लिए उनके साथ चल सकते हैं। हम तो जैसे तैयार ही बैठे थे।

कॉन्फ्रेंस हॉल की सजावट के लिए आईपीएसएस (इंस्टीट्यूट ऑफ पीस एंड सेक्यूलर स्टडीज़) के कई वॉलेंटियर आए हुए थे। परिचय वगैरह के बाद हम जल्दी ही घुल-मिल गए। हम भी काम में हाथ बंटाने लगे। जिन्ना और गांधी की मुस्कुराते हुए ऐतिहासिक इकलौती तस्वीर वाला पोस्टर कान्फ्रेंस हॉल के बीचोंबीच लगाया गया। जंग के खिलाफ और अमन के पक्ष में कविताओं और कथनों वाले कई पोस्टर लगाए गए। सईदा दी ने कहा कि अभी मोबाइल सेवा बहाल कर दी गई है, और अगर घर किन्हीं को फोन करना हो, तो उनके मोबाईल से फोन कर लें। मैंने वर्धा के दोस्तों को फोन कर बताया कि हम सही सलामत पहुँच गए हैं। अच्छे से। और कि यहाँ के लोग बड़े ही दिलेर हैं।

लाहौर । २२ सितंबर ।

हम सुवह जल्दी ही तैयार हो गए। १० बजे से कांफ्रेंस शुरू होनी थी। अखबर, कल की अराजकता और बर्बादी की दास्तान बयान कर रहे थे। हम सभागार जल्दी ही पहुँच गए। वहाँ रंग-बिरंगे फूलों की माला पहनाकर हमारा स्वागत किया गया। फूलों की माला पहन, पहले पहल हम ज़रा असहज हो गए। असल में मेहमानो वाली औपचारिकता में हम खुद को फ़िट नहीं पा रहे थे। लेकिन कुछ दिन बाद, मुझे महसूस हुआ कि भारत से गए लोगों को पाकिस्तान में खास तवज्जो दी जाती है, बहुत प्यार दिया जाता है। लाहौर में आप जिनसे भी मिलिए, और उन्हें मालूम हो कि आप भारत से आए हैं, तो उनकी आँखों में चमक उतर आती है, वो आपकी सबसे अच्छी खातिरदारी करने की कोशिश करेंगे। लाहौर की संस्कृति में मेहमाननवाज़ी अपनी समूची खूबसूरती के साथ हर दिल में धड़कती है। कान्फ्रेंस में मेरी मुलाकात इलाहाबाद सम्मेलन में मिले कई दोस्तों से हुई। मुझे लाहौर में देख जहाँ वे हैरान थे, वहीं उनकी खुशी देखने के काबिल थी।

कान्फ्रेंस के दौरान भारत-पाकिस्तान संबंधों, और खास तौर से हाल में हुए वीजा-समझौते की समीक्षा की गई। कई वक्ताओं ने कहा कि हाल में हुआ वीज़ा पैक्ट आम -आवाम और वास्तविक दोस्ती के नज़रिये से आधा-अधूरा और नाकाफी है। और दूसरी अहम बात कि इसे लागू होने में अभी भी काफी वक्त लग सकता है। जहाँ इसे अभी कैबिनेट से मंजूरी समेत दोनों मुल्कों में नौकरशाही की भूलभुलैया वाली मेज से गुज़रना होगा। इस कॉन्फ्रेंस में पाकिस्तान के कई मशहूर इतिहासकार, पत्रकार, सियासी लीडरान और धर्मनिरपेक्ष और और तरक्की पसंद कार्यकर्ता मौजूद थे। उनमें से एक सर्वाधिक दिलचस्प

बात जिसका यहाँ उल्लेख करने से मैं खुद को नहीं रोक पा रहा हूँ, पाकिस्तान के प्रमुख इतिहासकार डॉ. मुबारक अली की थी। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान को १९४७ के बाद अपनी पहचान बनानी थी। पाकिस्तान बनने के कुछ ही दिनों बाद एक फौजी जनरल ने जिन्ना के पाकिस्तान को मटियामेट करते हुए, आधिकारिक तौर पर पाकिस्तान को इस्लामिक गणतंत्र बना दिया था। पाकिस्तान के हुक्मरानों को पेट्रोडॉलर हासिल करना था। सो, उन्होंने अपने इस्लाम का वास्ता अरब से जोड़ा। अब अरब की इस्लामी ताकतें पाकिस्तान के मुसलमानों को 'असल इस्लामी' नहीं मानती थीं, क्योंकि उनके अनुसार इस इलाके के मुसलमान तो धर्मांतरित हैं। अतः फौजी जनरलों और दीगर सियासी हुक्मरानों ने खुद को 'असल इस्लामी' दिखाने के लिए अरब के शासकों की अंधाधुंध नकल करनी शुरू कर दी। इस सनक में उन्होंने जानवरों, फूलों और पेड़ों तक का बंटवारा कर डाला। डॉ. मुबारक अली ने कहा, 'एक दौर में, पाकिस्तान के हुक्मरानों ने अपने आप को असल इस्लामी साबित करने के लिए प्रचार करना शुरू किया कि ऊंट हमारा जानवर है। और पीपल के बजाए खजूर हमारा पेड़ है। इसलिए लाहौर जैसे शहर में जहाँ कि पीपल के पेड़ बहुतायत में मिलते थे, पीपल के पेड़ों को काटकर खजूर के पेड़ लगाए जाने लगे।' उनके स्वर में गुस्सा और अफसोस था। अब इन ज़ाहिलों को कैन समझाए कि ऊँट और खजूर यहाँ की जल-वायविक परिस्थितियों में 'सरवाइव' नहीं कर सकते। और फिर खजूर न तो यहाँ फल दे सकता, और न ही छाँव। जबकि लाहौर कभी पहले छाँव का शहर हुआ करता था।

भारत के मशहूर मानवाधिकार और सामाजिक कार्यकर्ता संदीप पांडेय २२ सितंबर को ही लाहौर पहुँच पाए। उन्हें शाम में लौटना भी है। उनके आने पर हॉल में बैठे श्रोता उठ खड़े हुए और गर्मजोशी और तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत किया गया।

संदीपजी के व्याख्यान के बाद एक श्रोता ने उनसे बड़ा दिलचस्प सवाल किया, 'खबरें हैं कि पंजाब और कश्मीर के इलाके में भारत ने खुफिया बांध बनाए हैं, और हमारे यहाँ पानी की बड़ी किल्लत है। इस मसले पर आपके क्या विचार हैं। हाँ, आपकी इस बात से मैं इत्तेफाक रखता हूँ कि पानी की बड़ी गंभीर समस्या है। संदीपजी हँसते हुए बोले, 'लेकिन मुझे ये समझ में नहीं आता कि आज हाई प्रोफाइल सैटेलाइट के जमाने में कोई बाँध खुफिया कैसे हो सकता है..? सारे श्रोता ठठाकर हँस पड़े। संदीपजी ने कहा, कि हम पिछले २५-३० सालों से लगातार ये कह रहे हैं कि भारत-पाकिस्तान अबी अपनी सभी और हरेक समस्या का हल आपसी बातचीत के ज़रिए निकाल सकते हैं, तो पानी की समस्या भी असल में बातचीत करने की अनिच्छा की ही समस्या ज्यादा है।

खाने और चाय के दौरान हमारे कई नए दोस्त बने। कॉलेज और विश्वविद्यालय के कई लोगों से मेरी मुलाकात हुई। लोग काफी दिलचस्पी और मुहब्बत से मिल रहे हैं। बातचीत के दौरान, कई दोस्तों ने मुझे अपनी यूनिवर्सिटी घूमने के लिए आमंत्रित किया।

लाहौर में मैं जितने भी लोगों से मिला, उनका जो पहला सवाल होता, उसमें शिकायत और तंज मिली होती. 'हम भारत और पाकिस्तान के लोग देखने-बोलने, खाने-पहनने, और रंग-सूतर में एक जैसे हैं। फिर हम आपसे में दोस्ती क्यूं नहीं कर सकते..? आपसी बातचीत के बाद के हम (मैं, भारत के एक नारिक के बतौर, और मेरा कोई भी पाकिस्तानी दोस्त) इस नतीजे पर पहुँचते कि इन बदतर हालातों और अवाम को जकड़े रखने के लिए दोनों ही मुल्कों के हुक्मरान, और उनके 'ऑफिशियल नैरेटिव्स' जिम्मेदार हैं। पाकिस्तान में अगर स्कूली इतिहास को तोड़-मरोड़कर बच्चों के जेहन में इस्लामी राष्ट्रवादी का जहर भरा जाता है, तो भारत के सियासतदान अपने मुल्क की हर गड़बड़ी के लिए पाकिस्तान के मत्थे सारा दोष मढ़ देते हैं। अवाम को यह समझने की ज़रूरत है कि ये दोनों मुल्क अमरीका से हथियारों की भारी खरीदारी करते हैं, और सीमा पर दजोनों ओर से तनी हुई बंदूकें यूरोप या अमेरिका से खरीदी गई होती हैं। इस तथ्य के पक्ष में एक मज़बूत प्रमाण मुझे एक अन्य कार्यक्रम के दौरान मिला। जहाँ, पाकिस्तान सेना के एक रिटायर्ड अधिकारी ने सियाचिन की मिसाल देते हुए बताया कि वहाँ की जलवायु में साँस लेने के लिए दोनों मुल्कों के सैनिकों को जो साजो-सामान चाहिए होते हैं, मसलन जूते, जैकेट, दास्ताने, टोपियाँ, तंबू वगैरह, वे इन दोनों ही मुल्कों में नहीं बनते। दोनों मुल्क यूरोप और खास तौर से अमेरिका से ये चीजें मंगाते हैं। वे बोले, 'अपनी जिंदगी की एक बेहद अहम उमर मैंने सेना को दी, और अब मुझे महसूस होता है कि मुझे ठगा गया। मुझे लूटा गया।' उनकी आँखें आँसुओं से नम थी।

२३ सितंबर।

आज सुबह लगभग सारे ही अखबारों की प्रमुख खबर थी कि पिछले दिनों समूचे मुल्क में हुए 'प्रदर्शनों' से फैली अराजकता और गंदगी को साफ करने के लिए कराची से युवाओं के एख समूह ने सोशल मीडिया के ज़रिये एक अभियान चलाया। देखते ही देखते इस्लामाबाद, लाहौर समेत कई शहरों के लोग सड़कों, चौराहों, पार्कों और अन्य सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई मुहिम में शामिल हुए। आगजनी, लूटपाट और हिंसा के लिए जिम्मेदार दक्षिण-पंथियों की कड़ी आलोचनाओं के स्वर मज़बूत हो रहे थे। लोग बहुत व्यथित थे, और उम्मीदों की राह तलाश रहे थे।

सुबह मैं अलसाई नींद में था। हमारे साथी शिरीष और नासिर पठान साहब तब तक बाहर से घूम-घामकर वापस कमरे में आ गए थे। उनके साथ एक सज्ञन और थे। लंबा कद, लगभग पचास के आस-पास की उमर। वे पारंपरिक लाहौरी कुर्ता और सलवार पहने थे। उन्होंने गर्मजोशी से गले मिलते हुए बताया कि वे किराए पर टैक्सी चलाते हैं। जब उन्हें मालूम हुआ कि उनके किराएदार भारत से हैं, तो उन्होंने शिरीष और नासिर को सुबह-सुबह लाहौर घुमाया। किसी मशहूर जगह पर शानदार नाश्ता कराया। किराया लेने से मना कर दिया, और अब दोनों मेहमानों को कमरे तक छोड़ने आए थे। विदा होते वक्त उन्होंने कहा, 'आप जब तक लाहौर में हैं, कोई ज़रूरत पड़े, तो याद करें और जब कभी आप लाहौर आएं, हमें जरूर खबर करें, हम आपके लिए हमेशा हाज़िर हैं।

शाम में हम लाहौर के आधुनिक बाज़ार 'लिबर्टी मार्केट' में घूमने के लिए गए। हमें यह जगह कुछ-कुछ नई दिल्ली के 'कनॉट प्लेस'की याद दिला रही है। कुछ खरीदारी

करने के बाद लाहौर के एक मशहूर रेस्त्रां में 'डिनर' के लिए गए। व्यंजन इतने स्वादिष्ट कि वे हमेशा याद आएं। खाने के बाद हम गप-शप में मशगुल हो गए। इस बीच, हमारे कुछ भारतीय दौस्त मेज़ से उठे और बिल का भुगतान कर आए। जब हम चलने को हुए, तो हमारी मेज़बान ने रेस्त्रां के कर्मचारियों से बिल लाने को कहा। लोकिन कर्मचारी ने जब बिल के भुगतान के बारे बताया, तो हमारी मेज़बान बहुत नाराज़ हुईं। गुस्से से वे बोली, 'तुम अपने मैनेजर को बुलाओ, तुम लोगों को मेहमानों से पैसे लेने की हिम्मत कैसे हुई? तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं आई, भारत से आए हमारे मेहमानों से पैसे लेने में? बुलाओ मैनेजर को। सारे कर्मचारियों समेत हम हक्का-बक्का रह गए। हमने सफाई दी, 'आपा, इन कर्मचारियों को क्या मालूम की कौन भारत से आया है और कौन पाकिस्तान से? और इसमें हमारी गलती है, न कि कर्मचारियों की।' आपा डाँटते हुए बोली, इसका मतलब कि हम भारत आएंगे, तो हमें पैसों का इंतजाम करके आना पड़ेगा, है न? हम शर्म के मारे गड़े जा रहे थे। हमने बहुत माफी माँगी। लेकिन आपा हमारी हरकत से बहुत दुखी और गुस्सा हुई थीं। वे कांपने सी लगी थी। उन्होंने कर्मचारियों से बिल वापस करने को कहा और खुद भुगतान कर रेस्त्रा से बाहर आ गईं। सीढ़ियाँ उतरकर वे लॉन में बैठ गईं। और दीमे से बोली, 'आप लोग जाइये, कल मिलते हैं। हम सर झुकाए सलाम कहते हुए रेस्त्रां से बाहर आ गए।

लाहौर शहर, और कई अनुभवी लोग कहते हैं कि समूचे पाकिस्तान की यह खूबसूरती है कि वे भारत से आए लोगों को बेपनाह प्यार देते हैं, खूब मेहमाननवाजी करते हैं। दिल्ली लौटकर ये शानदार अनुभव मैं अपने दोस्तों से साझा कर रहा था। मैंने एक दोस्त से कहा कि हम भारतीय शायद इतनी मेहमाननवाजी और आत्मीयता पाकिस्तान से आए मेहमानों को नहीं देते हैं। मेरे दोस्त ने कहा,'सिर्फ पाकिस्तान ही नहीं, देखो। हम नेपालियों, भूटानियों या किसी अन्य पड़ोसी मुल्क के लोगों से कैसा व्यवहार करते हैं? हमारी उन्हें कमतर देखने की आदत-सी बन गई है।' मैं खामोशी से अपने दोस्त की बात से सहमत था। पकिस्तान में बॉलीवुड की एक से बढ़कर एक फिल्मों का प्रसारण होता है और दोस्तों ने हमें बताया कि पाकिस्तान के लोग भारत के चैनलों में प्रसारित बॉलिवुड की फिल्में बड़े शौक से देखते हैं। इसके अलावा लाहौर शहर के लोग खास तौर से भारत से आयातित पान बड़े चाव से खाते हैं। पाकिस्तान के रौशन खयाल लोग वहाँ के कठमुल्लाओं के बारे में क चुटकुला कहते हैं कि ये लोग भारत से आयातित पान खाते हैं और वही पान चबाते हुए बारत के खिलाफ नफरत की आग उगलते हैं। वे चुटकी लेते हैं, ऐसे लोगों को तो सिर्फ पान खाने के लिए भारत से दोस्ती कर लेनी चाहिए।' अफसोस वे बताते हैं कि तरक्की पसंद लोग अगर भारत से दोस्ती की बात करते हैं, तो ये मुल्ला-मौलवी उन्हें 'देशद्रोही' कहते हैं।

२४ और २५ सितंबर

होटल से आज हमें रुख्सत होना था। मुझे अपने रिसर्च के सिलसिले में पाकिस्तान मानवाधिकार आयोग (ह्यूमन राइट कमीशन ऑफ पाकिस्तान) जाना था। यह आयोग पाकिस्तान का सबसे बड़ा मानवाधिकार संगठन है, जिसकी स्थापना नागरिकों की पहलकदमी से हुई थी। यहाँ के एक अधिकारी ने मुझे बताया कि कि आयोग किसी भी तरह के सरकारी या कॉर्पोरेट अनुदान पर नहीं बल्कि काफी हद तक स्वतंत्र वित्तीय स्रोतों पर विकसित संगठन है। मानवाधिकार के लिए नेतृत्वकारी संघर्ष के अलावा इसकी एक अन्य बेहद अहम उपलब्धि है। यहाँ पाकिस्तान से प्रकाशित लगभग सारे अखबारों का संकलन है। यह संकलन इस मायने में खास है कि यहाँ अखबारों में प्रकाशित सामग्रियों का विषयानुसार दस्तावेजीकरण किया गया है, जहाँ दुनियाभर के रिसर्च इस संकलन के लिए यहाँ आते हैं।

शाम में हमें एक दोस्त के घर जाना था। उन्होंने अमेरिका से अपनी पढ़ाई की है, और कई सालों तक अमेरिका के विभिन्न शहरों में रहने के बाद अब लाहौर आ गए हैं। वे अब ब्रिटिश ज़माने में स्थापित, फॉरमैन, क्रिश्चन कॉलेज में पढ़ाते हैं। दरवाजे पर दस्तक सुन उनके बुजुर्ग पिता बाहर आए। हमारे दोस्त ने अपने पिता से कहा, 'आपने तकलीफ क्यों की?' उन्होंने पिता से हमारा परिचय कराया, 'बोले, 'ये भारत से आए हमारे यार हैं। पिता की आँखें आसमान की ओर उठ गईं, और एक तसल्लीभरी नज़र से देखते हुए वे मुस्कुराते दिए। खाने की मेज पर पिता से हमारी गुफ़्तगू शुरू हुई। वे बिहार, दिल्ली, उत्तर प्रदेश महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के कस्बों और शहरों से वाकिफ थे। इन इलाकों के बारे में बातें करते हुए उनके स्वर में एक गहन उदासी तारी हो गई। उनकी आँखों में सुनहरी यादों के साथ दर्द की दास्तान की झलकियाँ भी उभर आईं। और वे किसी गहरी सोच में डूबते हुए से जान पड़े। उन्होंने हमें बताया कि उन्हें १९४८ की शुरुआत में बोपाल जबरन छोड़ना पड़ा था, और वह भी सिर्फ इसलिए क्यों कि उनके सारे रिश्तेदार हाल ही में बने पाकिस्तान में आ चुके थे। मैंने उन्हें बताया कि मैं मध्य प्रदेश से ताल्लुक रखता हूँ। और राजधानी रहने के कारण मेरा भोपाल आना-जाना होता रहता है। वे मुझसे अपने बचपन के शहर का हालचाल और उसकी रंग-सूरत के बारे में पूछने लगे। उनकी आवाज़ में उमरभर, रह-रहकर याद आने वाली अंतरंगता की गाढ़ी निशानियाँ झाँक रही थीं। काँपते से सुर में उन्होंने कहा, 'मेरे बचपन का शहर, पिछले ६५ सालों से मेरे दिल और दिमाग पर हमेशा दस्तक देता है। एक परछाई की तरह इसने मेरा कभी साथ नहीं छोड़ा।' उनकी पत्नी खाने की मेज़ पर उनके सामने बैठी थी। 'आप हमेशा भोपाल-भोपाल करते रहते हैं। आपको अपनी जिंदगी में जो कुछ भी दिया है, पाकिस्तान ने ही दिया है न? बच्चों को डाँटने जैसे अंदाज़ में उन्होंने कहा, 'हमारी तरफ मुखातिब होते हुए शिकायती लहज़े में वे बोलीं, 'ये हमेशा हमें भोपाल के किस्से बताक तंग करते रहते हैं, जब देखो तब भोपाल। हमारे दोस्त के अब्बू ने अंतहीन - सी खामोशी अख्तियार कर ली।

पिछले कुछ सालों से हमारे दोस्त के पिताजी, इकराम-उल-हक साहब, हफ्ते में दो दिन लाहौर शहर के व्यस्ततम चौराहों के आस-पास एक तख्ती के साथ अकेले ही खड़े होते हैं। तख्ती में उर्दू ज़बान में लिखा होता है- 'हमें जिन्ना का पाकिस्तान चाहिए।'

दूसरे दिन नाश्ते के वक्त, इकराम साहब ने बंटवारे के वक्त के अपने अनुभवों को हमसे साझा किया। उन्होंने बताया कि वे उन दिनों लाहोर के एक कॉलेज में पढ़ाई कर रहे थे। जब पाकिस्तान बनने की अधिकारिक घोषणा हुई, तो सारे मुल्क में दंगे फैल गए। सांप्रदायिक हिंसा से प्रभावित लोगों की मदद के लिए

उन्होंने नौजवानों का एक समूह बनाया और लाहौर से कॉलेज की पढ़ाई छोड़ बिहार जा पहुँचे। वहाँ पुलिस ने उन्हें साथियों समेत गिरफ्तार कर लिया। हालात दिनों-दिन बदतर होते जा रहे थे। कुछ दिनों बाद, एक हमदर्द पुलिस अधिकारी ने उन्हें बिहार से बार भेजने का बंदोबस्त किया। बरेली तक उन्होंने रेल में बगैर टिकट यात्रा की। फिर आगे पकड़े जाने के डर से उतर ही रहे थे, लेकिन हालात इसकी इजाज़त नहीं दे रहे थे। १९४८ की शुरुआत में वे लाहौर आ गए।

मॉडल टाउन आधुनिक लाहौर के समृद्धतम इलाके में प्रमुख है। बंटवारे के पहले भी यह मोहल्ला काफी समृद्ध था। बाद में उस मुहल्ले से गुज़रते हुए मेरे एक दोस्त ने मुझे बताया कि यहाँ अभी भी कुछेक मंदिर हैं, और अब इस मोहल्ले के अधिकतर बाशिंदे उत्तर प्रदेश, दिल्ली और ब्रिटिश भारत के अन्य हिस्सों से आए मुसलमान हैं। इकराम साहब कह रहे थे कि उन्होंने ऐसा पाकिस्तान बनाने के लिए जद्दोजहद की थी, जहाँ विभिन्न समुदायों के लोग आपस में मुहब्बत और भाईचारे से रह सकें। पाकिस्तान के हुक्मरानों और फौजी अफसरों को धिक्कारते हुए उन्होंने बताया कि पाकिस्तान की संविधान सभा में ११ अगस्त १९४७ को जिन्ना के अहम भाषण, जिसमें जिन्ना कहते हैं कि पाकिस्तान का हर बाशिंदा अपनी आस्था के अनुसार मंदिर, मस्जिद या चर्च जानेके लिए आज़ाद है, और कि रियासत का मज़हब से कोई लेना-देना नहीं होगा, को बाद में हुक्मरानों ने अधिकारिक दस्तावेज़ों से गायब कर दिया। 'बंटवारे के कुछेक सालों के बाद से ही हम ये शिद्दत से महसूस कर रहे थे कि हमारी लड़ाई में कुछ बड़ी गलतियाँ हुई। वे अफसोसनाक स्वर में बोले, 'और अब मुझे यो लड़ाई ही बेमतलब लगती है।' हम सब काफी देर तक कामोश बैठे रहे।

२६ सितंबर

लाहौर से रुख्सत होते वक्त हमारी मेज़बान मुझे वाघा सीमा तक विदा करने के लिए आईं। तकरीबन ग्यारह का वक्त रहा होगा। लाहौर में मैं कुछ खास खरीददारी नहीं कर पाया था, लेकिन दोस्तों के 'गिफ्ट' से मेरा बैग भर गया था। प्रवेश द्वार पर तैनात बंदूकधारी सैनिक से सईदा दी ने कहा कि वे हमारी कार टर्मिनल तक जाने दें। मैं कार में ही बैठा रहा और हाव-बाव से लग रहा था कि काफी बहस हो रही थी। सईदा दी काफी गुस्से में थीं। तब तक उनके एक परिचित अधिकारी दफ्तर जाते हुए मिल गए। उन्होंने देरी के लिए माफी माँगी और सईदा दी स टर्मिनल तक आने का आग्रह करने लगे। सईदा दी ने सैनिक के व्यवहार पर अपनी आपत्ति दर्ज कराई, और टर्मिनल तक आने से मना कर दिया। लाचार खामोशी से मैंने उन्हें विदा कहा, और पैदल ही सामान घसीटते हुए टर्मिनल आ गया। अंदर आते ही पाकिस्तान के इमिग्रेशन अधिकारियों ने मेरा सामान स्कैन किया। वहाँ तैनात एक अधिकारी ने बैग दिखाने को कहा। मैने कहा, 'जब आपने स्कैन कर लिया है, तो खोलकर दिखाने की क्या ज़रूरत है? मैंने बड़ी मुश्किल से अपना बैग व्यवस्थित किया है, तो आप खोलने के बाद कृपया उसे इसी तरह पैक भी कर दें।' मेरी बात से वो अधिकारी खुश नहीं हुए। बोले, 'आप भरोसा रखिए।' मैंने कहा, 'मेरे पास भरोसे के अलावा कोई चारा नहीं है, लेकिन भरोसा जरा आपको बी दिखाना चाहिए, जबकि आपने मेरा बैग स्कैन भी कर लिया है।' आपके रिसर्च के लिए कुछ ज़रूरी अखबारों की कतरनें मैंने फोटोकॉपी करा ली थी। यह बकायदा एक भारी बंडल हो गया था, सो मैंने इसकी काफी मजबूत पैकिंग कर ली थी। पैकिंग फाड़ते हुए उस अधिकारी ने तुनकते हुए कहा, 'अगर हम भरोसा नहीं करते, तो आपका सामान उठाकर फेंक देते।' मैंने विरोध जताते हुए कहा, 'मुझे भी भरोसा है कि आप ऐसा कर सकते हैं। बहरहाल, आप मेहरबानी करके मेरा सामान पैक करा दें।' इसके बाद इसके बाद वे अधिकारी मेरी मेज़बान के बारे में पूछताछ करने लगे। अपनी मेज़बान का नाम बताने पर उन्होंने पूछा, ये हिंदू है कि मुसलमान ? मैंने कहा, 'मैंने मज़हब के बारे में उनसे कभी नहीं पूछा, और आपको इससे क्या मतलब है? अधिकारी ने कहा, 'हमें ये जानना पड़ता है कि आप किसके यहाँ गए थे । और और उनका नाम आधा मुसलमान और आधा हिंदू लग रहा है न ? मैंने मुस्कुराते हुए कहा, 'देखिए जनाब, आपको दिलचस्पी है, तो आपको पहले ही पता होना चाहिए। मेरा वक्त क्यों जाया कर रहे हैं।' काउंटर पे जिस कर्मचारी का व्यवहार हमारे पाकिस्तान में हमारे प्रवेश करते वक्त काफी खुशनुमा था, अब शुष्कता में तब्दील हो गया था। वे मुझसे कह रहे थे कि लाहौर छोड़ने से पहले मैंने अपने वीजा फॉर्म में थाने में जाकर मुहर नहीं लगवाई है। मैने उनसे कहा, 'देखिए, इतनी उर्दू मुझे भी आती है और जो भी ज़रूरी औपचारिकताएँ थीं, वो मैंने पूरी कर रखी हैं। थोड़ी देर बाद एक अधिकारी मेरे पास आए और अदब से बोले, 'आप जा सकते हैं।' मैंने राहत की साँस ली। मैने पीछे मुड़कर पाकिस्तान के दोस्तों को उनकी मदद, मुहब्बत और मेहमाननवाज़ी के लिए शुक्रिया अदा किया और भारत की सीमा में आ गया।

भरत के टर्मिनल में दाखिल होते ही इमिग्रेशन के अधिकारियों ने मुझसे पूछताछ शुरू कर दी, लेकिन इस बार उनका अंदाजा ज़रा दोस्ताना था। वे जानना चाहते थे कि पाकिस्तान का मीडिया भारत और खास तौर पर कश्मीर के बारे क्या लिखता है? मैंने उन्हें बताया कि अभी मैंने रिसर्च के लिए सामग्री का संकलन किया है। किसी नतीजे पर नहीं पहुँचा हूँ। वे पाकिस्तान के समाज, राजनीति और लोगों के बीच मौजूद विश्वासों को जानने के लिए काफी उत्सुक दिख रहे थे। एक अधिकारी ने मुझे बताया कि जेएनयू से मध्यकाल के इतिहास पर रिसर्च कर रहे हैं और कोई 'चोनॉय' उनके गाईड हैं। मैंने जब कहा कि 'कलमित्र चेनॉय' तो बोले, 'हाँ, हाँ । वही। मैने कहना चाहा कि अगर उन्हें पाकिस्तान के मीड़िया के बारे में इतनी फिक्र है, तो आजकल सारे अखबार ऑनलाइन हैं। पढ़ते क्यूँ नहीं ? और कि कलमित्र चेनॉय तो राजनीतिशास्त्र के प्रोफेसर हैं, लेकिन उन्हें अपनी गलती सुधारकर किसी दूसरे गाईड का नाम लेने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, सो मैं बस मुस्कुराकर रह गया।

टर्मिनल से बाहर, अमृतसर के लिए टैक्सी लेते हुए मैं मन ही मन बुदबुदाया, 'आम आवाम को परेशान करने के मामले में दोनों मुल्कों भारत और पाकिस्तान के हुक्मरानों और ज्ञान के मामले में दरिद्रनारायण नौकरशाही में कोई खास फर्क नहीं है।

(लेखक हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से भारत-पाक संबंध में मीडिया की भूमिका' विषय पर पीएचडी लिख रहे हैं।)

उत्तर प्रदेश: राजनीि

राजसत्ता की परिकल्पना समाज में शांति व्यवस्था की हिफाजत तथा जनमानस की सुख गंभीर खतरा बन जाएं तो फिर ऐसे राज-काज को क्या कहें? रघुराज प्रताप सिंह उर्फ बहस एक बार फिर से छिड़ गई है। भारत में अपराधियों और राजनीति का नापाक गठज राजनीतिक पार्टी शेष नहीं रह गई है, जिसकी अंदरूनी पांतों में माफिया-अपराधी तत्वों कमेटी की सिफारिशों पर अमल किया जाता तो यकीनन इतने बदतर हालात नहीं होते। को प्रतिबंधित करने की सिफारिश एन.एन. वोह

प्रभात कुमार रॉय

उत्तर प्रदेश राष्ट्र का का सबसे विशाल प्रांत रहा है, जिसकी आबादी तकरीबन 18 करोड़ है। नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो के मुताबिक सबसे अधिक अपराध दिल्ली-मुंबई जैसे महानगरों में होते रहे हैं, किंतु लखनऊ, कानपुर, बनारस, आगरा, इलाहबाद और मेरठ आदि शहर भी अपराध के आंकड़ों में बहुत पीछे नहीं हैं। आबादी, शिक्षा का अनुपात और उद्यमिता के बढ़ने के साथ अपराधों में बढ़ोतरी को दुनिया भर में देखा गया। तकरीबन एक वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश की कमान जब युवा अखिलेश यादव ने संभाली, तो उनसे बहुत सी उम्मीदें बंधी। शालीन, सौम्य और उच्चशिक्षा प्राप्त युवा नेता अखिलेश के कारण ही सपा को उत्तर प्रदेश में पहली बार पूर्ण बहुमत हासिल हुआ। अमर सिंह को समाजवादी पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा देने और बाहुबली डीपी यादव को पार्टी में शामिल नहीं करने का अखिलेश का शानदार निर्णय सपा के पक्ष में गया। लेकिन चुनाव जीतने के बाद अखिलेश ने जिस तरह से मंत्रिमंडल में माफिया और अपराधी छवि के लोगों को स्थान दिया, उससे सपा के कामकाज की पुरानी शक्ल-ओ-सूरत सामने आ गई। आखिरकार यह गठबंधन की सरकार नहीं, बल्कि प्रबल बहुमत वाली सरकार है। ऐसी कौन सी विवशता रही कि अखिलेश ने माफिया राजनीति के समक्ष घुटने टेक दिए।

वस्तुतः यह सपा का संपूर्ण राजनीतिक चरित्र रहा है जिसका मुकाबला अखिलेश कदाचित नहीं कर सके। एक वर्ष के अंतराल में ही अखिलेश हुकूमत जनमानस की उम्मीदों पर खरा उतरने में नाकाम नजर आई। उत्तर प्रदेश के राजनीतिक घटनाक्रम से स्पष्ट होता है कि शासन-प्रशासन पर अखिलेश की पकड़ अत्यंत कमजोर है। उत्तरप्रदेश के अनेक इलाकों में घटित हुए नृशंस सांप्रदायिक दंगों से लेकर इलाहाबाद महाकुंभ में विकट बदइंतजामी तक और हाल में दिनदहाड़े एक पुलिस अधिकारी जिया उल हक की नृशंस हत्या से साफ जाहिर हुआ कि अखिलेश ने पहले की मुलायम हुकूमत की गलतियों से कोई सबक नहीं सीखा। लिहाजा जनादेश की अनदेखी करने का खामियाजा सपा को 2014 के आम चुनावों में उठाना पड़ सकता है।

कुंडा इलाका, आजादी से पूर्व प्रतापगढ़ (अवध) की एक छोटी सी रियासत थी। स्वतंत्रता आन्दोलन में कालाकांकर और भदरी दो रियासतों का प्रायः जिक्र आता है, जोकि स्वतंत्रता आन्दोलन में अत्यंत अग्रणी बनी रही। कालाकांकर से ही देश का पहला हिन्दी दैनिक अख़बार 'हिंदुस्तान' के नाम से महामना मदनमोहन मालवीय के संपादकत्व में निकाला गया था। भदरी के राजा बजरंग बहादुर स्वतंत्रता सेनानी होने के नाते हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल और एक विश्वविद्यालय के कुलपति मनोनीत हुए थे। विगत 25 वर्षों से भदरी-बैंती दोनों ही रियासतें एक होने के पश्चात कुंडा इलाका विशिष्ट तौर से कुख्यात हुआ। रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैय्या और उनके पिता उदय प्रताप सिंह भी संगीन अपराधिक रिकार्ड में जघन्य मुलजिमों के तौर पर दर्ज रहे हैं। राजा भैय्या को एक मुख्यमंत्री द्वारा 'कुंडा का गुंडा' की संज्ञा प्रदान की गई। यह कटु तथ्य है कि बाद में जरूरत पड़ने पर राजा भैय्या को उन्होंने अपने मंत्रिमंडल में भी शामिल किया।

मायावती के शासनकाल में राजा भैय्या और उनके पिता उदय प्रताप सिंह दोनों को जेल में भी रखा गया। लेकिन चुनावों में राजा भैय्या को जीतने से नहीं रोका जा सका। इसे खौफ-ओ-दहशत निरुपित करें अथवा लोकप्रियता की स्थिति, दोनों की अपनी-अपनी अगल-अलग व्याख्याएं रही हैं। विगत चुनाव में भी रघुराज प्रताप सिंह समाजवादी पार्टी के सहयोगी रहे, लेकिन सदैव की तरह निर्दलीय के तौर पर ही चुनाव में उतरे और जीते। यह तथ्य सत्य के निकट है कि इस परिवार के खौफ-ओ-दहशत से प्रतापगढ़ जिले के सरकारी अधि नहीं रहे हैं। अब तो एक पुलिस अधिकारी को अपनी जान गंवानी पड़ी। क केंद्र की सत्ता का रास्ता उत्तर प्रदेश से होकर गुजरता है।

चुनाव के दौरान अखिलेश ने कहा था कि चुनाव में जनता से किये ग किये जाएंगे। कन्या विद्याधन, बेरोजगारी भत्ता, किसानों की कर्ज माफी, कि वापस लेने और छात्रों को लैपटॉप एवं टैबलेट देनें की योजनाएं अभी भी व पर नहीं उतर पाई हैं। बेरोजगारी भत्ता लेने वाले छात्रों की भारी भीड़ को दे स्थानों पर इसे स्थगित करना पड़ा। अभी तक अखिलेश ने ऐसा कोई बड़ा क है, जिसकी तारीफ की जा सके। फिलहाल तो अखिलेश अभी चेक बांटने होकर रह गये हैं।

सपा के पूर्व की हुकूमतों के खराब रिकॉर्ड को देखते हुए अखि चुनौती थी कि सूबे में कानून-व्यवस्था का सशक्त राज स्थापि लेकिन सपा के कार्यकर्ताओं पर ही उत्पात फैलाने के इल्ज रहे हैं। मुलायम अनेक अवसरों पर कार्यकर्ताओं को अ की नसीहत प्रदान कर चुके हैं, लेकिन नसीहत का प्र प्रतीत हो रहा। हुकूमत बनते कार्य

आखिरकार यह गठबंधन की सरक प्रबल बहुमत वाली सरकार है। विवशता रही कि अखिलेश ने माफि समक्ष घुटने टेक दि

ति का अपराधीकरण

**-समृद्धि के लिए की गई। लेकिन जब राजसत्ता के अलंबदार ही शांति और सुरक्षा के लिए
जा भैया के बहाने राजनीति के अपराधीकरण और अपराध के राजनीतिकरण की जटिल
ड़ कई दशकों पूर्व प्रारम्भ हुआ, जो बाद में अत्यंत शक्तिशाली होता चला गया। आज कोई
ी घुसपैठ नहीं हुई हो। यदि राजनीति के अपराधीकरण के प्रश्न पर गठित एन.एन. वोहरा
ौरतलब है कि संगीन अपराधों के तहत चार्जशीट किए गए मुलजिमों के चुनाव में शिरकत
रा कमेटी ने वर्षों पहले केंद्रीय हुकूमत से की थी।**

ारी भी अछूते
ा जाता है कि

सभी वादे पूरे
नों से मुकदमे
तविक जमीन
तेहुए अनेक
न नहीं उठाया
क ही सीमित

ेश के सामने
ा किया जाये,
ा आयद होते
ासन में रहने
व पड़ता नहीं
ी सपा के
ओं के
अलावा

मंत्रियों और विधायकों की करतूतों के आगे अखिलेश असहाय से दृष्टिगत होने लगे। अखिलेश के लिए सिरदर्द उनके मंत्रिमंडल के सहयोगी ही बन गए। इनके कारण ही अखिलेश को कई सरकारी घोषणाएं करनी पड़ी, जिन्हें कुछ ही घंटों के भीतर वापस लेना पड़ा। वरिष्ठ मंत्री आजम खान अपनी ही सरकार के विरुद्ध प्रायः बोलते रहते हैं। वरिष्ठ मंत्री अपनी मनमर्जी से विभागों को चला रहे हैं और अखिलेश कुछ भी करने की हिम्मत नहीं दिखा पाए। शासकीय तालमेल की कमी के कारण सरकारी काम प्रभावित हो रहा है। यही मुख्य वजह है, कि अखिलेश की सरकार बनने के बाद अपराध के मामलों में बेहद बढ़ोतरी हुई है। हाल के दंगे इसकी ताजा मिसाल हैं।

लेखक नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजरी कॉउंसिल के पूर्व सदस्य हैं।

देनी होगी सुरक्षा की गारंटी

उत्तर प्रदेश कांग्रेस के विधान मंडल दल के नेता प्रदीप माथुर का मानना है कि जब प्रदेश की बागडोर सपा की ओर से मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने संभाली थी तो लोगों को लगा था कि अब प्रदेश की दशा और दिशा दोनों में सुधार होगा। अखिलेश यादव दिशा तो तय नहीं कर पाए, अलबत्ता प्रदेश की दशा खराब हो रही है। प्रदेश में कानून-व्यवस्था चरमरा गयी है। बलात्कार, हत्या, लूट, जमीनों पर कब्जे की घटनाएं बढ़ गई हैं। खाकी भी सुरक्षित नहीं है। कानून-व्यवस्था चरमराने से आम-आदमी भयभीत है। महिलाएं सुरक्षित नहीं है। प्रदेश में दो दर्जन से अधिक दंगे हो चुके है। टाण्डा और कुण्डा की घटनाएं इस सरकार के उदाहरण हैं। प्रदेश में कानून का ग्राफ नीचे गिरा है। औद्योगिक नीति को बढ़ावा देने और आगरा में समिट सम्मेलन करने से प्रदेश का कल्याण नहीं होगा। मुख्यमंत्री को आगे आकर प्रदेश के हर आदमी को सुरक्षा की गारंटी देनी पड़ेगी। तभी प्रदेश की दशा सुधर सकेगी।

**र नहीं, बल्कि
सी कौन सी
या राजनीति के**

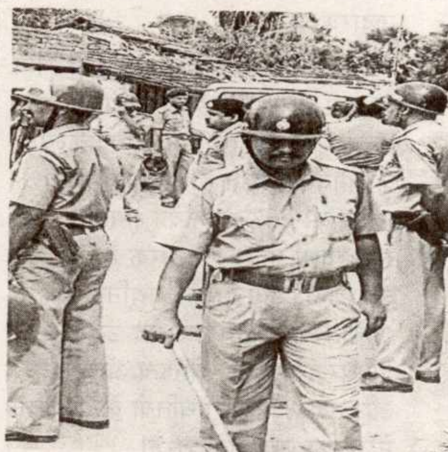

व्यापार करने लायक नहीं रह गया है उत्तर प्रदेश

अपराध और सपा में चोली दामन का साथ है, नहीं तो प्रदेश में इतने अपराध नहीं बढ़ते। जब भी यह पार्टी सत्ता में आती है तब अपराध का ग्राफ बढ़ जाता है। अभी तो अपराध कुछ भी नहीं है, क्योंकि 2014 का चुनाव है। इसके बाद स्थिति और भी भयावह होने वाली है। अखिलेश यादव खुद ही फ्री हैंड नहीं हैं। अपराध बढ़ने के कारण व्यापारी इतने भयभीत हो चुके हैं कि यूपी में व्यापार करने से डरने लगे हैं। आगरा में कितने ही चांदी व्यापारी मारे गए। जनता जब तक शांत है, तभी तक लोग मनमानी कर रहे हैं। एक दिन तो यह मौन टूटेगा ही। पिछली सरकार में इतना अनर्थ नहीं था जितना इस में है। अब तो कहीं कोई सुनवाई ही नहीं हो रही।

रविन्द्र पाल सिंह टिम्मा, संयोजक, सावधान व्यापारी एसोसिएशन, आगरा

विकास कम, अपराध का ग्राफ ज्यादा बढ़ा

यूपी में अपराध दिन दुनी रात चौगुनी गति से बढ़ रहा है। यहां विकास कम और अपराध खूब हो रहे है। कोई भी सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा है। अपराधियों को मंत्री बनाया जाएगा, तो ऐसा होगा ही। पुलिस प्रशासन चाहे तो इस पर अंकुश लगा सकता है, पर सबको मलाईदार जगह चाहिए। इसलिए इस ओर ध्यान ही नहीं दिया जा रहा है। गलती जनता की है जो अपराधियों को वोट देती है। फिर दोष देती है कि अपराध बढ़ रहा है। यह हर पार्टी पर लागू होता है। सपा ही क्यों, अन्य पार्टियों की सरकारें भी अपराध पर नियंत्रण नहीं लगा पाईं।

इब्राहीम जैदी, अध्यक्ष, ताजमहल मस्जिद मैनेजमेंट कमेटी, आगरा

यूपी को अपराध मुक्त करने में जुटी है सपा

अपराध कहां नहीं होते। हर जगह होते हैं। यूपी की

वेद उद्धारक महर्षि दयानंद

- डॉ. चंद्रकांत गर्जे

महर्षि दयानंद के व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक पहलु हैं। वे आधुनिक युग के आचार्य थे, युगद्रष्टा, युग प्रवर्तक थे। राष्ट्रवाद के उद्गाता थे, पुनर्जागरण के पुरोधा थे। उनकी ईश्वर में असीम श्रद्धा थी। वे अध्येता थे। ज्ञाता थे। वैदिक संस्कृति के रक्षक थे, वैदिक धर्म के अनुयायी थे, वेद के भाष्यकार थे, आर्य समाज के संस्थापक थे और थे वेद के उद्धारक।

वेद ईश्वर की वाणी हैं, अपौरुषीय नित्य है। वेदों में सभी तरह की विद्या है, ज्ञान-विज्ञान है। वेदों में समूचे विश्वकल्याण की भावना निहित है। 'विश्वार्यम' विश्व-मानव को श्रेष्ठ करने की क्षमता है। वेद स्वयं प्राणी मात्र के उद्धारक हैं, तब यह क्यों कहा जाता है कि आधुनिक युग के आचार्य महर्षि दयानन्द वेद उद्धारक हैं। ऋषिवर दयानंद के व्यक्तित्व और कृतित्व और तत्कालीन परिस्थितियों के अध्ययन में इसका उत्तर निहित है।

वेद के प्राचीन भाष्यकारों में आचार्य यास्क, आचार्य दुर्ग, आचार्य स्कंद स्वामी, आचार्य महेश्वर, आचार्य उद्गीत, आचार्य वररुचि, मध्ययुगीन भाष्यकारों में आचार्य वेंकट रामन, आचार्य आत्मानंद, आचार्य सायण, आचार्य मुद्गल, आचार्य उबट, आचार्य महीधर और पाश्चात्य भाष्यकारों में ए.बी. कीथ, विल्सन, ग्रासमान, लुडविंग, ग्रिफिथ, ओल्डनबर्ग, मैक्समूलर आदि हैं। आधुनिक काल में १९वीं शताब्दी के भाष्यकार भी हैं। उपर्युक्त भाष्यकारों में (दो-एक छोड़कर) महर्षि दयानंद का नाम उल्लेखनीय है।

समूचे भारत में ब्रटिशों की सत्ता थी। इस सत्ता में ब्रिटिशों की मशनरी, झील, मनी पावर, मिलिट्री शक्ति मेकाले की शिक्षा नीति, मैक्समूलर की धर्मनीति दिख पड़ती है। ऐसे युग में इसवी सन १९२४ में गुजरात के टंकारा ग्राम के पौराणिक परिवार में जन्मे मुलशंकर ने, अपनी आयु के लगभग २२ वर्ष में सच्चे शिव के दर्शन के लिए अपना ग्रह त्याग दिया था। यह उसका महाभिनिष्क्रमण था। यह घटना उनके भावी जीवन की रूपरेखा को सुनिश्चित करती है। उत्तरभारत का भ्रमण, भ्रमणकाल में अनेक साधु-संन्यासियों से सम्पर्क, योग धर्म आदि पर चर्चा के उपरांत भी उनकी मनोभिलाषा पूरी नहीं हुई थी। ईसवी सन १८६० में वे मथुरा के प्रज्ञाचक्षु, वैदिक व्याकरण के भास्कर स्वामी विरजानंद दंडी की पाठशाला में पहुँचे। उन्होंने स्वामी विरजानंद के सानिध्य में आचार्य यास्क के निरुक्त ग्रंथ, निघंटू, ब्राह्मण ग्रंथ, वेद आदि आर्ष ग्रंथों का विधिवत अध्ययन किया। इसके पश्चात ही उन्होंने वेद तथा ईश्वर (शिव) के सच्चे स्वरूप को समाज के सम्मुख रखने की ठानी।

ईसवी सन १८६६-६७ में हरिद्वार के कुंभ मेले में पाखंड-खंडनीय पताका फहरायी। वैसे स्वामी दयानंद इस धरती पर केवल ६० वर्ष तक रहे। (१८२४-१८३)। (किन्तु १८६३-१८८३ विरजानंद की पाठशाला से निकलना और मृत्यु तक) केवल २० वर्ष में ही उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक पहलु उजागर हुए दिख पड़ते हैं। इस छोटे से काल में उन्होंने लगभग ३३ छोटे-बड़े ग्रंथों की रचना की थी। (डॉ. भवानीलाल भारतीय ने अपने ग्रंथ नवजागर के पुरोधा परिशिष्ट ४-५, पृष्ठ ५८२-५८३पर ग्रंथो की सूची दी है)।

इन ग्रंथों में 'सत्यार्थ प्रकाश' संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ऋग्वेद भाष्य (अपूर्ण-सात मंडल, सुक्त ६२ मंत्र २तक ही) यजुर्वेद भाष्य, आर्थोद्दिशमाला, भ्राति निवारण, सत्या-सत्य विवेक, चतुर्वेद विषय सूचि, ये कुछ ऐसे ग्रंथ हैं, जिनके वेद और वैदिक संस्कृति विशेष रूप में मुखरित हुई है। इसके अतिरिक्त अनेक व्याख्यान, प्रवचन, वेद प्रचार कार्य, शास्त्रार्थ देश के विभिन्न स्थानों पर आर्य समाजों की स्थापना आदि उनके विशेष कार्यों का उल्लेख करना आवश्यक है। उन्होंने अपने जीवनकाल में ही बम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना दिनांक १० अप्रैल १८७५ को की थी। इसके अतिरिक्त पंजाब में १२, सिंध में १, पश्चिमोत्तर प्रदेश में ४८, राजस्थान में ६, तत्कालीन बम्बई प्रदेश में २९, ऐसे ७९ आर्य समाजों की स्थापना की थी। (अजमेर के परोपकारिणी सभा कार्यालय में रखी सूचि के अनुसार आर्य जगत् के अन्वेषकों के अनुसार उनके जीवनकाल में ही अन्य दस स्थानों में आर्य समाजों की स्थापना हुई थी। ऋषिवर की योजना थी कि अपूर्ण ऋग्वेद भाष्य को पूर्ण करें तथा सामवेद और अथर्ववेद का भाष्य भी करें, किन्तु क्रूर काल के आघात के कारण उनकी यह योजना कार्यान्वित नहीं हो सकी।

लेख के ऊपरी अंश में प्राचीन, मद्ययुगीन, पाश्चात्य वेद भाष्यकारों के आचार्यों का नामोल्लेख किया गया है। अधिकांश भाष्यकारों की मन्त्रार्थ शैली एकांगी थी। वैदिक व्याकरण के अनुसार नहीं थी। वे वेद को मात्र यज्ञ तथा धार्मिक कर्मकांडों तक ही सीमित रखे हुए थे। वे यत्र में पशुबलि के हिमायती थे। वेदों में पशु हिंसा, मांसाहार के विश्लेषक थे। वे 'अज' का अर्थ बकरे के रूप में करते थे।

वेद में वर्णित गौतम और अहिल्या के संदर्भ में उन्हें बलात्कार की भावना दिख पड़ती थी। वे यम और यति (भाई-बहन) के बीच मैथुनी संबंध स्थापित करते थे। वेदों में स्वर्ग और नरक की कल्पना की जा रही थी, तो कहीं सुर असुर में युद्ध की कथा भी कही जा रही थी। वेदों में ईश्वर के अवतारों की कल्पना की जाती थी, तो कहीं इतिहास ढूँढा जाता रहा था। संक्षेप में कहा जा सकता है कि वे वेदाचार्य वैदिक व्याकरण के अनुरूप न कर केवल रूढार्थ प्रयुक्त करते हुए वे अपनी इच्छानुसार वेंदमंत्रों का अर्थ किया करते थे।

इन भाष्यकारों ने वेदों का अध्ययन जरूर

किया था, पर वे वास्तविक अर्थ के जानने में असमर्थ थे।

पाश्चात्य भाष्यकारों की भूमिका भी अलग नहीं थी। उन्होंने भी कहना शुरू कर दिया कि वेद गड़रियों के गीत हैं, मुर्खों की बातें उसमें निहित हैं। उस समय ऐसी स्थिति थी कि वेद नाम पर मात्र कर्मकाण्ड हो रहा था और कर्मकाण्ड आजीविका का साधन बन गया था। समाज में अनेक विघातक रूढियाँ घर कर गई थी। ये सब अवैदिक प्रक्रियाएँ मूल वेद को समाप्त ही कर चुकी थी। वेद का अस्तित्व न के बराबर था। ऐसे समय में महर्षि दयानंद ने अपने गुरु स्वामी विरजानंद के मार्गदर्शन में वेदों का अध्ययन किया था। यास्क के निरुक्त, निघन्टू, ब्राह्मण आदि ग्रंथों के आधार पर वेद मंत्रों को जानने का प्रयास किया था।

प्रायः यह देखा जाता है कि वेद का एक ही मंत्र एक से अधिक संहिता में मिलता है। उदा. ऋग्वेद का एक मंत्र यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में मिलता है। इसी प्रकार सामवेद और अथर्ववेद के मंत्रों के विषय में कहा जा सकता है कि एक ही मंत्र अन्य संहिताओं में अवश्य पाया जाता है। पर प्रसंग, विषयानुसार मंत्रार्थ भी यही परिवर्तित हो जाता है। महर्षि दयानन्द वेदमंत्रार्थ के इन रहस्यों से भली-भाँति परिचित हुए थे।

वेदों में पाया जाता है कि वेद के हर मंत्र का ऋषि और देवता होता है। दयानन्द के मतानुसार जिस-जिस ऋ षियों ने वेदमन्त्रार्थ को स्पष्ट किया है, उस-उस ऋषि का नाम उस मंत्र के साथ दिया गया है। दयानंद की दृष्टि में ऋषि वह है, जो वेदों का अध्येता, ज्ञाता, राग-द्वेषादि रहित है। ईश्वर भी ऋषि है। मंत्र में जिस नाम से किसी की याचना की जाती है, या जिस नाम से वस्तु का वर्णन किया जाता है, वह उस मंत्र का देवता हो जाता है। वेद-मंत्र में अग्नि, मित्र,वरुण, सूर्य, सविता आदि देवता हैं। देवता के अनुसार मंत्रों के विभिन्न अर्थ भी हो जाते हैं। दयानन्द एक ही ईश्वर के विभिन्न गुणनाम दर्शाते हैं।

दयानंद की दृष्टि में वेद के चार विषय हैं- १) विज्ञान काण्ड, २) कर्मकाण्ड, ३) उपासना काण्ड, ४) ज्ञानकाण्ड। वेद की दो विधाएं हैं। १) परा विद्या २) अपरा विद्या। परा विद्या का संबंध अदृष्य ब्रह्म से है, तो अपरा विद्या का संबंध पृथ्वी का समूचा ज्ञान (ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद-विषय)।ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में मूल ५७ अध्याय हैं।_नमें कुछ महत्व के विषय वेद, धर्म, सृष्टि, विज्ञान, पृथिवी-लोक भ्रमण, आकर्षण, प्रकाश, विमान विद्या, गणित विद्या, सौर विद्या, वैदक शास्त्र, राजा-प्रजा, व्याकरण, मानव उपयोगी अन्य विषय, संन्यासाश्रम, वर्णाश्रम आदि हैं। सत्यार्थ प्रकाश के १२ समुल्लास हैं। ईश्वर स्वरूप, वाल शिक्षा, सृष्टि उत्पत्ति, विद्या, ब्रिद्या विषय, भक्षा-भक्ष विषय, मनुष्य निर्मित संप्रदायों का खण्डन आदि विषय हैं।

दयानंद ने अग्नि का अर्थ केवल चुल्हे में जलने वाली अग्नि न लेते हुए वह यज्ञ से लेकर विज्ञान क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली अग्नि बताया है। उन्होंने अग्नि के १७० अर्थ बताए हैं। दयानन्द ने इन्द्र देवता के कई अर्थ दिये हैं। सूर्य, सूर्य प्रकाश, वायु, शत्रओं का नाश करने वाला, सूर्य लोक, दाता, सेनापति आदि। दयानन्द ने यज्ञ में केवल याज्ञिक प्रक्रिया को महत्व नहीं दिया है, वरन् यज्ञ कर्म में भी मानवी जीवन तथा सृष्टि की वास्तविकता को देखा है। उनका यज्ञ असीमित अर्थ में है। ईश्वर के अनन्त गुण विज्ञान के समस्त विषयों को समेटने वाला है।

दयानन्द की वेदमन्त्रार्थ शैली काफी भिन्न रही है। वंदमंत्र या एक-एक शब्द का अर्थ व्याख्यायित करना यह दयानन्द की मंत्रार्थ शैली रही है। समूचे ऋ चा (मंत्र) को व्याख्यायित करना यह दयानंद की मन्त्रार्थ शैली रही है। इस शैली का अनुसरण कर जिससे जो मन्त्रार्थ होता है, उसे ही वे व्यक्त करते थे। दयानंद ने वेदमंत्रों के ऐसे अर्थ किये हैं, जिनका समाज-जीवन से सम्बन्ध है। उनके मन्त्रार्थ काल्पनिक या अपनी इच्छानुसार नहीं हैं। उनके मन्त्रार्थ को आधार हैं। ब्रह्म, यज्ञवल्क्य यास्क, वात्स्यायन, जैमिनी, पाणिनी, पतंजलि आदि के ग्रंथ।

ऋषिवर के पूर्व भी एक ऐसा ही युग आया था, जिसमें बौद्ध, जैन सम्प्रदायों का बोल-बाला था। इन सम्प्रदायों ने वैदिक धर्म का जमकर विरोध किया था। वेद के अस्तित्व को मिटाने का भरसक प्रयास किया था। ऐसे समय आद्य शंकराचार्य ने वैदिक धर्म को पुनः स्थापित करने का अथक प्रयास किया था। इस प्रयास में उन्हें अपने प्राण गँवाने पड़े। उनके अनन्तर एक ऐसा ही युग आया, जिसमें अनेक अवैदिक रूढियाँ समाज में उत्पन्न हुई थीं। धर्म के नाम पर कर्मकांड, शीर्षस्थ स्थान पर पहुँच गया था। ईश्वर की संकल्पना बदल गयी थी। वेद का अस्तित्व समाप्त हुआ था। समाज में यह धारणा बनी थी कि राक्षसों ने वेदों का अपहरण किया है। जो कुछ बचा हुआ है, एक विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित था। स्त्री शुद्ध वेद पढ़ने की अधिकारी नहीं थी। ऐसे समय महर्षि दयानंद का आविर्भाव हुआ। उन्होंने वेद के द्वार सबके लिए खुले किये। लुप्त हुए वेदों का सत्यार्थ प्रकाश सारे विश्व में फैलाया। यह घोषणा की कि वेद समस्त ज्ञान का मूल है। 'यथेमा वाचं कल्याणी भावदानी' (यजुर्वेद २६-२), कल्याणकारी वेदवाणी जनमात्र के लिए है। किसी एक वर्ग तक सीमित नहीं।

आज का विज्ञान जगत् भी वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक को जानने के प्रयास में लगा है। उसी सत्य विद्याओं के पुस्तक के आधार पर रसायन शास्त्र, भौतिक विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान, वनस्पति कृषि विज्ञान, गणित, विद्या सौरविद्या के सिद्धांतों की गहाराई में पहुँचने के प्रयास में लगा है। परिणामतः विज्ञान युग के नये अध्याय का प्रारंभ हो चुका है। इसी दृष्टि से महर्षि दयानन्द वेद के उद्धारक हैं। वेद के उद्धार में ही क्रूर काल ने उनके प्राण हर लिये। यह देश के लिए ही नहीं, अपितु विश्व के लिए सबसे बड़ी हानि है।

संदर्भ ग्रंथ : १) वैदिक बाङ्मय का इतिहास, - पं. भगवद्त्त

२) मेरी दृष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके कार्य- पं. युधिष्ठिर मीमांसक

३) वेद भाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएँ - डॉ. रामनाथ वेदालंकार

जीवन के रंग देव दयानंदजी के संग

- डॉ. महेशकुमार शर्मा

महर्षि दयानंद सरस्वतीजी बड़े विनोदप्रिय थे। उनमें यह शक्ति थी कि श्रोताओं को जब चाहे हँसा दें। जब वे देखते कि श्रोता गंभीर विषयों को सुनते-सुनते अन्यमस्क हो गये हैं, तो कोई कथानक या चुटकुला ऐसा सुना देते थे कि श्रोता खिलखिलाकर हँस पड़ते थे और फिर गंभीर विषयों की ओर आकृष्ट हो जाते थे।

वर्ष १९८०, काशी नगर का दृष्टांत है। महर्षि दयानंदजी बाबाजी शब्द के अर्थ किया करते थे। 'वा' (विकल्पे), वाजी-अश्व या अश्वतर। एक बुढ़िया स्त्री उनके घर बर्तन मांजने आया करती थी। वह जब अपने कार्य से निपटकर जाता करती थी, तो यह कहकर जाया करती थी कि बाबाजी मैं जाती हूँ। एक दिन महर्षि ने उससे कहा कि तू मुझे बाबाजी मत कहा कर। उसने कहा कि और क्या कहूँ? महाराज जी ने कहा कि स्वामीजी कहा कर। बुढ़िया बोली कि यह बात मुझे कैसे याद रहेगी? बाबाजी कहने में क्या बुराई है? तो महाराजजी ने कहा, कि इस शब्द के अर्थ हैं घोड़ा, नहीं तो खच्चर।

एक दिन एक व्यक्ति जो भांग बहुत पिया करता था, स्वामी दयानंदजी की सेवा में उपस्थित हुआ और उनसे प्रश्न किया कि चित्त किस प्रकार एकाग्र हो सकता है? महाराजजी ने किंचित मुस्कुराहट के साथ उत्तर दिया कि भांग पीने से। वह इसे सुनकर विस्मित भी हुआ और लज्जित भी। स्वामीजी को उसके दुर्व्यसन का ज्ञान नहीं था।

२१ जनवरी, सन् १८७५ को महर्षि देव दयानंदजी ने राजकोट में अहमदाबाद में कर्म विषय पर अतिमनोहर वक्तृता दी। इसमें उन्होंने बताया कि वही लोग अपने कार्यों में सफल हो सकते हैं, जिनका एक अनादि, अजर, अमर, निराकार, ईस्वर में विश्वास विश्वास होता है। वे अपने धर्म के विस्तार के उपायों को फैलाते हैं। उनके मन एक-दूसरे से मिल जाते हैं। आपस में प्रेम की वृद्धि होती है और धर्म का अभिमान आ जाता है। वे एक-दूसरे की प्रत्येक संभव उपाय से सहायता करते हैं। जब हमारे सब आर्य लोग वेद को सर्वोपरि और प्रामाणिक समझकर चलेंगे और हमार मन मिल जाएँगे, जो हम सारे संसार को वेदमंत्रों के नाद से निनादित कर देंगे।

ग्वालियर के महाराजा ने जब स्वामी दयानंदजी से पूछा कि भागवत कथा का क्या महात्म्य है? तो उत्तर मे महर्षि ने कहा कि क्लेष के अतिरिक्त और कुछ नहीं। महाराजा ने इसके उपरांत भी कथा करवाई। किन्तु उनकी राजधानी में विशुचिका (हैजा) का प्रकोप हुआ, महाराणी का गर्भपात हो गया और कुछ समय पश्चात युवराज की भी मृत्यु हो गई। यह सब संयोग मात्र ही था। लेकिन स्वामीजी का कथन सत्य निकला।

वर्ष १८६९ में फर्रुखाबाद में अपने प्रवास के दौरान महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वतीजी ने मनुष्य के कर्तव्य के बारे में बताते हुए कहा था कि मनुष्य का कर्तव्य ईश्वर- प्राप्ति है, जो ईश्वरीय अज्ञाओं के पालन अर्थात वेदानुकूल आचरण, मनुष्य धर्म के दसवें लक्षणों पर चलने और अधर्म त्याग से हो सकते हैं। यह पूछने पर कि मनुष्य को क्या करना चाहिए? तो उन्होंने उत्तर दिया कि जैसे ईश्वर दयालु है, वैसे मनुष्य को सब पर दया करनी चाहिए और जैसे ईश्वर सत्य है, वैसे मनुष्य को भी सत्य मानना, सत्य बोलना और सत्य ही करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि मानव के लिए दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं, क्षमा से बढ़कर कोई कर्म नहीं। और सेवा से बढ़कर और कोई पूजा नहीं। वर्ष १८७५ में बडौदा में एक दिन स्वामी दयानंदजी क्षौर (मुंडन) करा रहे थे। एक पंडित ने आकर कहा कि संन्यासियों का धर्म तो त्याग है, आप देह विभूषा में क्यों लगे हैं? स्वामीजी ने हँसते हुए उत्तर दिया कि यदि बढ़ाने में ही त्याग है, तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी है। यह कहकर उसे उपदेश दिया कि देह की रक्षा के लिए उसे संवारना पाप नहीं है। जो मनुष्य परोपकारी है, उन्हें अपने देह की रक्षा करना आवश्यक है, जिससे वे उपकार कार्य अच्छे प्रकार से कर सके।

एक बार सन १८७७ में आर्य समाज- लाहौर के अधिवेशन में सभासदों ने यह प्रस्ताव किया कि महर्षि स्वामी दयानंद महाराज जी को आर्य समाज लाहौर के संरक्षण या आदिनायक की पदवी दी जाय। परंतु महाराज ने उसे अस्वीकार किया और कहा कि इसमें गुरुपद की गंध आती है। और मेरा उद्देश्य ही गुरुपद को तोड़ने का है, न कि स्वयं गुरु बनकर एक नया पंथ स्थापित करने का। यदि कल को इस पदवी से मेरा ही मस्तिष्क फिर जाए, अथवा ऐसा न हो और मेरा स्थानापन्न घमंड में आकर कोई अन्यथा कार्य करने लगे, तो तुम लोगों को बड़ी कठिनता होगी और वही दोष उत्पन्न हो जाएंगे, जो दूसरे अन्य पंथों में हो गए हैं। इसके पश्चात यह प्रस्ताव हुआ कि स्वामी दयानंदजी को आर्य समाज लाहौर के परम सहायक की पदवी दी जाए। इसे भी देव दयानंदजी ने अस्वीकार कर दिया और कहा कि यदि परम सहायक मानोगे, तो उस जगदीश, जगद् गुरु, सर्वशक्तिमान को क्या मानोगे? अंत में सभासदों के विनम्र आग्रह पर स्वामीजी ने साधारण सहायक (सभासद) बनना स्वीकार किया और अन्य सभासदों की भाँति उनका शुभनाम भी सभासदों की सूची में अंकित किया गया।

एक छोटीसी ज्ञात गोष्टी में स्वामी दयानंद सरस्वतीजी के कुछ भक्त बैठे थे। उनमें से एक ने सकुचाते हुए कहा कि स्वामीजी जो कुछ मैं पूछना चाहता हूँ, वह आपके निजी जीवन से घनिष्ठ संबंध रखता है, इसलिए पूछते हुए संकोच हो रहा है। स्वामीजी बोले कि आचार्य और शिष्य का संबंध आवरण रहित होता है। जानते नहीं, मशाल के साथ अंधेरा ही रहता हा है, भले ही मात्रा में नगन्य क्यों न हो। इसलिए निःसंकोच होकर पूछो।

तब उस महानुभाव ने पूछा कि महाराज, आपको क्या काम ने कभी नहीं सताया? यह सुनकर स्वामीजी ने नेत्र भींच लिये और ध्यानमग्न से हो गये। फिर बोले कि प्रश्न सचमुच ही समझदारी का किया गया है। शिष्यों को गुरु से और गुरु को शिष्यों से कुछ भी छिपाकर नहीं रखना चाहिए, तबी तो शिष्य उच्च बन सकेंगे। अस्तु, काम मेरे समीप नहीं आया और न ही मैंने उसे देखा है। यदि सब-तब आया होगा, तो मेरे मस्तिष्क और हृदय के द्वारों को देखकर, बाहर बैठे-बैठे उकता कर निराश हो लौट गया होगा। मेरे मस्तिष्क और हृदय को वेद-भाष्यादि के लेखन तथा सास्त्राथों से अवकाश ही कहाँ मिलता है, जिससे मैं इस निम्न दैहिक स्तर पर आकर यहाँ के दृष्य देखूँ, सुनूँ और उन पर ध्यान दूँ?

इतने में एक सज्जन ने पूछा कि महाराज, क्या आप स्वप्न में भी काम से पीड़ित नहीं हुए? इस पर स्वामी दयानंदजी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया कि भाई, जब काम को मैंने अंतर में प्रवेश करने के लिए द्वार ही नहीं दिखाई दिया, तब क्रिडा भी कैसे और किससे करता?

जहाँ तक मेरी स्मृति काम दे रही है, इस शरीर से शुक्र की एक बूँद भी बाहर नहीं गई है। यह सुनकर सब अवाक् रह गये। भला इतना उच्च जीवन कितने मानवों से सध सकेगा।

वीरों का जीवन सदा यज्ञमय होता है।

- डॉ. अशोक आर्य

जो व्यक्ति वीर होते हैं, वह निरंतर यज्ञ करते रहते हैं। अपने जीवन को यज्ञमय बना लेते हैं। अपने समाज, अपने देश व अपने परिवार की रक्षा के लिए निरंतर यत्न करते रहते हैं। स्वयं को इसकी समिधा बना लेते हैं। स्वयं को इस रक्षा यज्ञ की सामग्री बना लेते हैं तथा स्वयं को ही इस यज्ञ के लिए प्रयुक्त होने वाला घी बनाकर निरंतर आहुति देते रहते हैं। इस जीवन यज्ञ की अग्नि को कभी बुझने नहीं देते तथा अपने परिवार, नगर, देश व समाज की उन्नति का, रक्षा यज्ञ किया गया कारण बनते हैं। तथा अंत में मोक्ष पाते हैं। इस आशय को सामवेद के मंत्र संख्या ८२ में इस प्रकार प्रकाशित है-

यदि वीरों अनुश्यादग्निमिधिन्त मर्त्यः।
आजुहव्ध्दव्यमानुषक शर्म भक्षित दैव्यम॥
- सामवेद ८२

यदि मानव अपने शत्रुओं को दहलाने की इच्छा रखता है, उसे डराना चाहता है, उसे भगाना चाहता है, मारना चाहता है, तो वह शत्रुओं में निरंतर लड़ाई में मरने की संभावना सदा बनी रहती है। किन्तु इसकी चिंता किये बिना निरंतर संघर्ष रत रहें। इस प्रकार का ही एक युद्ध हमारे शरीर के अंदर भी सदा रहता है। यह युद्ध काम-क्रोध शत्रुओं से होता है। इस युद्ध में प्रभु की सहायता के बिना विजय संभव नहीं होती। प्रभु इन शत्रुओं को जलाने का कार्य करता है। इसलिए परमपिता की शरण में जाना आवश्यक होता है। अतः प्रभु का स्मरण करें, उसको जागृत करें तथा इस इंद्रियों के युद्ध में उस प्रभु की सहायता लेकर दुष्कर्मिय इंद्रियों को इस युद्ध में पराजित करें। इस मंत्र के आरंभ में 'यदि' शब्द का प्रयोग किया गया है। यह शब्द इस बात का द्योतक है कि जीवकर्म करने में स्वतंत्र है। कर्म करते समय उसे किसी के आदेश का पालन नहीं करना होता, किसी की आज्ञा के अधीन नहीं रहना होता। इस विषय में पूर्णतया स्वाधीन होता है। इसलिए यह पूर्णतया हमारी इच्छा पर निर्भर है कि कर्म करते समय शत्रु विनाशक यज्ञ करते समय हम उस परम पिता परमात्मा का स्मरण करें, अथवा न करें। यह भी मंत्र में स्पष्ट किया गया है कि इस युद्ध में शत्रु को पराजित करना संभन नहीं है। हमने जो शत्रु के नाश का संकल्प लेकर यज्ञ आरंभ किया है, उस यज्ञ की पूर्ति प्रभु के सहयोग के बिना, प्रभु की सहायता के बिना संभव नहीं है। प्रभु की सहायता के बिना यह यज्ञ करते हुए यज्ञ तो नहीं, हम ही समाप्त हो जावेंगे। किन्तु हमारे शत्रु निर्भय होकर घुमाते रहे। हमें तथा हमारे आश्रयदाताओं को डराते रहेंगे।

इन शत्रुओं को जलाने का कार्य प्रभु ही कर सकते हैं। जलना अग्नि से ही संभव होता है तथा वह पिता अग्नि स्वरूप होने के कारण इन्हें जलाने में पूर्णतया सक्षम होते हैं। इसलिए शत्रुविनाश के लिए उस पिता का सहयोग आवश्यक होता है। मानव की शक्ति के अंतर्गत इन्हें भस्म करना नहीं आता। यह मानव शक्ति के परे की वस्तु है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम उस प्रभु को अपने हृदय मंदिर में स्थान दें, हृदय रूपी मंदिर में उस प्रभु का आसन लगाएं। उसे अपने हृदय में बिठावे। यह हृदय ही हमारे युद्ध का स्थान है। जहाँ युद्ध होता हो, योद्धा का वहाँ होना आवश्यक होता है। अन्यथा योद्धा युद्ध किससे करेगा? हमारा हृदय ही इंद्रियों से युद्ध करने का स्थान होता है। इसलिए योद्धा प्रभु को उस हृदय में ही ले जाना होता है। किसी बाहरी मंदिर में इसे बैठाने से हम इंद्रिय युद्ध में सफल नहीं हो सकते।

यह तो ऊपर बताया ही गया है कि इन शत्रुओं को कंपित करने के लिए मारने के लिए हमें स्वयं इस यज्ञ की हवि बनना होता है। जब हमें उस परमपिता की सहायता मिल जाएगी, तो हम शत्रु विनाश करने में सक्षम होंगे, शत्रु को धमकाने में सक्षम होंगे, शत्रु को दहलाने में सक्षम होंगे तथा उसे भगा पाने में सक्षम होंगे। इस प्रकार अपने जीवन को इस यज्ञ की सामग्री बनाकर जनकल्याण में लगाकर जीवन, जो हमें शत वर्ष के लिए मिला है, यह शत वर्ष निरंतर हम यह यज्ञ करते रहेंगे, जनकल्याण कार्यों में लगे रहेंगे, जीवन को यज्ञमय बनाये रखेंगे, प्रजा के कल्याण के लिए हम निरंतर प्रजापत्य आहुतियाँ इस यज्ञ में देते रहेंगे। इस प्रकार प्रभु को हम अपना सहाय बना लेंगे। हमारा उस आलौकिक प्रभु से मिलन होगा, सहाय होगा, साथ मिलेगा। उस अलौकिक प्रभु की प्राप्ति से हमें किसी प्रकार का दुख न होकर हम जीवन में ही विशुद्ध सुखों का आनंद ले सकेंगे। अतः जीवनपर्यंत हवि बनकर जब प्रभु को सहायक बना हम शत्रु विनाश में लगते हैं, तो ही ऐसे सुख का अनुभव हो पाता है।

जो मानव सेवाभाव रखते हुए दूसरों का सहाय होता है, उससे मिलने वाला आनंद असीम होता है, जो भोग में मिलने वाले आनंद की तुलना में कहीं अधिक स्थायी व लाभप्रद होता है। मानव जिन प्राकृतिक सुखों के लिए भटकता है, इन सुखों में सदा दुख मिले रहते हैं। दुःखों से मिश्रित आनंद कभी स्थायी व परमानंद की प्राप्ति नहीं करा सकते। जब प्रभु का सहयोग मिल जाता है, प्रभु का प्रकाश मिल जाता है, प्रभू का साथ मिल जाता है, तो इससे मिलने वाला आनंद स्थायी होता है। यह आनंद दुःखों को दूर कर देता है, समाप्त कर देता है, नाश कर देता है तथा इस प्रकार मिलने वाला आनंद शुद्ध आनंद होता है। इस आनंद में किसी प्रकार की मिलावट नहीं होती। इस प्रकार का आनंद स्थायी होता है। इससे ही हमें शुद्ध आनंद का अनुभव होता है।

इस सबसे स्पष्ट होता है कि मानव निरंतर शुद्ध आनंद पाने के लिए भटकता है, वह नहीं जानता कि शुद्ध आनंद उसे कैसे मिलेगा? जबकि इसे पाने का साधन उसके अपने पास ही होता है। वह नहीं जानता कि जब तक वह अपने जीवन को हवि नहीं बना लेता, तब तक यह आनंद मिलने वाला नहीं है। जब उसे यह सब समझ आ जाता है, तब वह अपने जीवन की भी चिंता नहीं करता, वह मृत्यु के भय से ऊपर उठ जाता है तथा अपने जीवन को इस यज्ञ की सामग्री बनाकर इसे निरंतर प्रज्वलित रखता है। इस प्रकार यज्ञ के द्वारा अपने जीवन को निर्दोष बना लेता है, अपने जीवन को सुंदर बना लेता है, अपने जीवन को आकर्षित बना लेता है तथा दिव्य गुणों का केंद्र बन जाता है। उसका जीवन इस प्रकार मानव शत्रुविजेता बन जाता है।

महर्षि के जीवन की कुछ उपयोगी बातें

- खुशहालचंद्र आर्य

बरेली में बहुत दिनों तक व्याख्यान-वाणी-वर्षा करने के पश्चात स्वामी दयानंदजी अश्विन सुदी ४ सं. १९३६ तदनुसार सन १८७८ को शहाजहाँपुर पधारे। विज्ञापनों द्वारा सबको विदित कर दिया कि धर्म-प्रेमीजन नियत समय पर आकर व्याख्यान श्रवण करें और लाभ उठावे। जिन्होंको प्रश्न पूछने हों, वे स्वामीजी के पास आकर अपनी शंकाओं का समाधान कराएं और उन्होंने वैदिक सिद्धांतों के अनुसार कई बिंदुओं पर व्याख्यान दिये।

१) सच्चा धर्म एक ही है- शाहजहाँपुर में सत्य पर व्याख्यान देते हुए स्वामीजी ने कहा- 'संसार में अनेक मत फैल रहे हैं। पंथाइयों पर विश्वास कर जिज्ञासू के लिए सत्य का जानना कठिण है। जिससे पूछो, वही अपने पंथ को सच्चा और दूसरों को झूठा बताता है। इस पर स्वामीजी ने दृष्टांत दिया कि एक जिज्ञासू किसी तत्वदर्शी पंडित के पास जाकर कहने लगा कि महाराज ! मुझे वह सच्चा धर्म बताइये, जिसके आराधन से मेरा कल्याण हो, मुझे परम धाम की उपलब्धि हो।'

तत्वदर्शी महात्मा ने कहा- चलो, आपको सद्धर्म का बोध कराएं। वे उसे एक मतवादी के पास ले गये। उन्होंने उस मतवादी से पूछा कि 'सत्य-धर्म कौनसा है?' उस पंथायी पुरुष ने अपने मत की मुक्तकंठ से प्रसंसा की और दूसरे मतों की निंदा की। इस प्रकार वह जिज्ञासू सभी मतवादियों के पास गया। सभी अपने उठने-बैठने की रीति को अपनी उपासना पद्धति को और अपने धर्म-मंदियों का धर्म वर्णण करते रहे। प्रत्येक ने अपने ही तीर्थों का यशगान किया। अपने ही देव-मूर्तियों को उत्तम बताया। अपने धर्मचिह्नों को बहिरंग साधनों को और अपने ही महापुरुषों के वाक्यों को 'धर्म' प्रदर्शित किया, और अपने से भिन्न मतों की प्रत्येक बात की भरपेट निंदा की। प्रत्येक मतवादी की नवीन धारणा, नवीन पद्धती, नूतन धर्म चिह्न, नई मूर्तियाँ और भिन्न-भिन्न तीर्थ देख व सुनकर उस जिज्ञासू का जी घबरा उठा। मतवादियों के सघन निविड बन में फँसकर वह दिशामूढ़ हो गया। अंत में वह तत्वदर्शी महात्मा की सेवा में उपस्थित होकर सच्चे धर्म की जिज्ञासा करने लगा। उस महात्मा ने जिज्ञासू से कहा, सत्य वह है, जिस पर सबकी एक सी साक्षी हो, जिसके सब कर्मों को सब मत-वादी स्वीकार करें, वही सच्चा धर्म है। उसी को मानो। किसी एक मत के आडम्बर में न फँसो। जिस धर्म में एक परमेश्वर पर विश्वास और उसकी उपासना, जैसा भाव और ज्ञान भीतर हो, उसी को वाणी द्वारा प्रकाश करना और उसी के अनुसार आचरण करना, जितेंद्रीय रहना, किसी के अधिकार और वस्तु को न छिनना और निर्बलों व दीनों पर दया करना बताया जाता है। वही धर्म सर्वोत्तम है। ऐसा धर्म केवल वैदिक धरम ही है और यही धर्म कल्याणकारी एवं मोक्षदाता है।

२) वेदों की पुनः स्थापना - एक दिन लक्ष्मणशास्त्री स्वामीजी के पास जाकर शास्त्रार्थ करने लगे। शास्त्रार्थ का विषय मूर्तिपूजन था। स्वामीजी ने शास्त्रीजी को कहा कि अपने पक्ष के पोषण में आप कोई वेद का प्रमाण उपस्थित कीजिए। शास्त्री महाराज ने कहा कि वेद का प्रमाण कहाँ से दूँ। वेद तो शंकासुर ने हरण कर लिया है। स्वामीजी ने तत्काल वेद हाथ में उठाकर कहा- पंडितजी आपके आलस्य और प्रमाद रूपी शंकासुर का वध करके ये वेद मैंने जर्मनी से मँगाए हैं। लीजिए। इनमें से खोजकर कोई प्रमाण निकालिए। उस समय सारी सभा हास्यरस में लोट-पोट हो गई। पंडितजी ने भी मौन साधन ही अच्छा समझा।

३) निर्भिक संन्यासी - महर्षिजी एक निर्भिक संन्यासी थे। कितना भी बडा मनुष्य कोई क्यों न हो, यदि वह कोई बात की, कोई दबाव की बात कह बैठता, तो स्वामीजी तुरंत करारा उत्तर देकर उसका मुँह बंद कर देते। एक दिन डिप्टी कलेक्टर अली जान महाशय उस मार्ग से निकले, जहाँ स्वामीजी व्याख्यान दिया करते थे। डिप्टी कलेक्टर ने कहा कि पंडितजी आपने व्याख्यान में कुछ संभलकर बोला कीजिए। स्वामीजी ने तत्काल उत्तर दिया, कि कोई भय की बात नहीं है। अब राज्य अंग्रेज़ी है, औरंगजेबी नहीं।

४) मितव्ययता के प्रबल समर्थक - स्वामीजी को मितव्ययता का भी सदा ध्यान रहता था। वे व्यर्थ व्यय के बड़े विरोधी थे। धन के सदुपयोग की सब को शिक्षा दिया करते थे। स्वामीजी को व्याख्यान स्थान पर पहुँचाने के लिए जो सज्जन गाड़ी भेजा करता था, वह एक दिन अपनी गाड़ी नहीं भेज सका। किराए की गाड़ी स्वामीजी के निवास स्थान पर आ गई। स्वमीजी ने उस गाड़ी को देखकर कहा, 'आप किराए की गाड़ी क्यों लाए हैं? मुझे गाड़ी में बैठने का कोई व्यसन नहीं है। आने-जाने में अधिक समय न व्यय हो जाए, इसलिए मैं गाड़ी में बैठता हूँ। वैसे तो मुझे पैदल चलने में ही आनंद आता है।

पण्डित भीमसेनजी एक दिन बाज़ार से भोजन सामग्री लिवा लाए। स्वामीजी ने भोज्य पदार्थों का निरीक्षण कर पण्डितजी को कहा, 'आटे आदि के काम आप से अधिक लिये गये हैं। ऐसा जान पड़ता है कि आपने भावों की पूछ-ताछ बिल्कुल नहीं की। पदार्थ भी उत्तम कोटि के नहीं हैं।भाई, धान एक उपयोगी वस्तु है। यह बड़े परिश्रम से प्राप्त होता है। इसलिए एक पैसे के व्यय में भी सावधान रहना चाहिए।

५) समय को एक बहुमूल्य वस्तु मानते थे - स्वामीजी समय को एक बहुमूल्य वस्तु मानते थे। उन्होंने दिन-रात के सारे पल अपने लिये तो नियम के तार में ही पिरो रखे थे, परंतु कर्मचारियों को भी व्यर्थ में समय बिताने नही देते थे। एक दिन उनके लेखन कार्य करने के लिए समय पर

(शेष पृष्ठ १८पर)

एक निरतिशय सर्वज्ञ ब्रह्म (अबोहरिया श्री राजेंद्र जिज्ञासु)

-वेदप्रकाश श्रोत्रिय

अब तक विद्वान आप्तों का यही सुनिश्चित मत रहा है एक निराकार सर्व व्यापक ब्रह्म ही निरतिशय सर्वस्व बल है। क्योंकि विवर्द्धमान ज्ञान बढ़ता हुआ जहाँ अतिशयता से रहित निरतिशय हो जाता है, वही सर्वज्ञ कहलाता है। वही सर्वज्ञ बीज की पराकाष्ठा है। जहाँ ज्ञान की काष्ठा प्राप्ति होती है, वह सर्वज्ञ है, उसके ही पुरुष विशेष कहा जाता है।

पर अब सिद्ध हो गया है कि निराकार सर्व व्यापक ब्रह्म ही ज्ञान की काष्ठा प्राप्ति वाला होगा। यह आवश्यक नहीं है। अब तो एक देशी, साकार, शरीरधारी, शास्त्रज्ञान विहीन भी निरातिशय सर्वज्ञ बीज हो सकता है। आप सोचते होंगे कि ऐसा आश्चर्यकारी कौन है? तो वर्तमान में ऐसी सर्वज्ञ बुद्धि जिस पर स्वाभाविक दृष्टि पड़ती है, वह महामान्य श्री 'राजेंद्र जिज्ञासु' अबोहरि है। सबको समझ लेना चाहिए, अब ये महानुभाव 'जिज्ञासु' पद तिरोहित एक साकार मूर्ति सर्वज्ञशक्ति है। ठीक भी है। क्योंकि अल्पज्ञ जीवों को ही ज्ञानादि गुण बढ़ाने के लिए ज्ञान काष्ठा वाले सर्वज्ञ, जिसके सामर्थ्य की अवधि नहीं, उपासना करनी होती है, तभी जिज्ञासु पद अपना अपना सार्थक्य रखता है।

श्री राजेंद्र जिज्ञासुजी के सर्वज्ञ होने में प्रमाण यह है कि परोपकारी पत्र के 'कुछ तड़प-कुछ झड़प' शीर्षकान्तर्गत कौनसा ऐसा विषय है, जिस पर निर्बाध रूप से इनकी लेखनी न चलती हो। चाहे फिर उसमें कितनी ही बार भूल सुधार के लिए न लिखना पड़े।

फरवरी (द्वितीय) २०१३ के परोपकारी के अंक में हिण्डौन से प्रकाशित अक्टूबर २०१२ के वैदिक पथ में डॉ. ज्वलन्त कुमारजी शास्त्री द्वारा पूज्य आचार्य श्री विशुद्धानंदजी को एक लेख में श्रद्धांजलि देते हुए, एक सत्यार्थ प्रकाश का अवतार प्रसंग उपस्थित हो गया, जो कि प्रसंग स्वाभाविक हो जाता है। इस सत्यार्थ प्रकाश का यह प्रसंग सर्वज्ञ ब्रह्म की आत्मा को आहत कर गया और विशुद्धानंदजी पर अपनी सर्वज्ञ बुद्धि से एक कठोरतम प्रहार कर दिया, जिससे यह प्रतिमात होता है कि उनके जीवन में मानो उनमें कोई भी आर्य समाज वा ऋषि को समझने वाला गुण या ज्ञान था ही नहीं। वह कठोरतम प्रहार उनके ६ तार के यज्ञोपवीत पहनने पर था। इस ६ तार के यज्ञोपवीत ने उनकी सब योग्यता तथा उनके व्याकरण, छन्द, अलंकार तथा अन्य शास्त्रों में मार्मिक दृष्टि प्राप्त प्रगल्भ पाणिङ पाण्डित्य को ही नहीं, बल्कि उनके समुज्वल निष्कलंक चरित्र को भी कलंकित करने का भरसक प्रयास किया गया, यह कहकर कि 'उदयपुर के मानक संस्करण में भी छह तारों का ही विधान होगा।'

हे सर्वज्ञ ब्रह्म श्री राजेंद्रजी। आपकी सर्वज्ञता ने पूज्य विशुद्धानन्दजी के ६ तार के यज्ञोपवीत पहनने वालों के मर्यादा विहीन समस्त मानवीय परम्पराओं की चूलें हिला देने वाले दुश्चरित नज़र नहीं आए, तब मैं पूछना चाहता हूँ कि तीन तार का यज्ञोपवीत जो सिद्धांतों के अनुकूल हैं, इस यज्ञोपवीत ने उनके अंधेरे कफन में लिपटे चरित्र को इस अन्धकार के परदे को चीरकर प्राणदा मधुर मुस्कान को प्रदान करने वाले सच्चरित्र का पथ उनकी आत्मा को जगाकर क्यों नहीं किया?

हे ब्रह्म । आपका अहं जो दुर्विनीत और संकीरण है, जो अपने से बाहर की वस्तु देखने के लिए अन्धा है और जो प्रकाश को प्रतिक्षिप्त भी नहीं करता, अपने ही विसंवादी स्वरों का अलाप करता है। यह अहं वह वीणा नहीं है, जिसकी तारों का स्वर असीम के निनाद से झंकृत होकर निःस्वार्थ प्रेमयुक्त निश्छल, निष्कपट, व्यवहार कर सके। असंतोष, असफलताओं की थकान, बीते समय के निरर्थक पछतावे और भविष्य की निष्कारण चिंताएं आपके उथले दिल को मुरझाये रहती हैं क्योंकि आपने अपनी आत्मा को विश्वात्मा से मिलाने का कोई भी प्रयास नहीं किया है। समस्त जीवन इसी इतिहास की झूठी करतव्यौत में ही व्यतीत हो गया। ये सब मौत के प्राणात्तक विष हैं, जो स्वयं तृप्ति की कामना, सदा जलने वाली ईर्ष्या रूपी तृष्णा की आग के रूप में प्रकट होते हैं। इसीलिए इन अपने कुटुंबजनों पर घटने वाली उपनिषद् श्रुति, स्मृतिपथ पर अवतरित नहीं हुई। होती भी क्यों? एक स्वार्थान्धता, दूसरी शास्त्र विहीनता- जो इस प्रकार है-

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो ना समाहितः
नाशान्तमानसो वनपि प्रज्ञानेननमाप्नुयात्।।

पक्षपात का नयनक (चश्मा) विशुद्धानन्द जैसे नीर-क्षीर विवेक सामर्थ्ययुक्त हंस को 'पोप' के रूप में देखता है। ज्ञानागार कानन में इसी धर्मराज हंस पर सरस्वती वैदिक विलास करती हुई समाद देखी जा सकती है। इसी विशुद्धानंद के विशद भाल मन्दिर में आसन जमाये सरस्वती ज्ञान दीपक जलाकर सत्य और झूठ की विवेचना की प्रचंड शिखा की कालिमा आप जैसे ईर्ष्यालु, कपटी, स्वार्थ तत्पर स्वात्मश्लाघा के पङ्क में धँसे हुए व्यक्ति के मुख पर जाकर चिपक जाती है। अन्यथा क्या कारण है। जिन श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का नाम लेकर उनके पूज्य रहे श्री परशुरामजी अमृतसरी से जवानी में सुना कि पोपों ने सत्यार्थ प्रकाश में मिलावट कर दी है। वे ब्रह्मदत्त जिज्ञासु स्वयं काशी में जाकर स्वयं छह तारों के यज्ञोपवीत पहनने वालों से ही पढ़े थे। वे ही क्यों, ज्वालापुर महाविद्यालय के पढ़ने वालों का इतिहास भी विदित है। बाद में भी आर्य समाज के शास्त्रार्थ समर में एक योद्धा के रूप में उतरे और छह तारों का यज्ञोपवीत पहनते रहे। उनकी ओर यह पक्षपातिनी दृष्टि क्यों नहीं घूमी। हे सर्वज्ञ ब्रह्म श्री राजेंद्रजी। काशी शास्त्रार्थ का इतिहास क्यों नहीं याद आया कि विशुद्धानंदजी के सदृश्य उनसे भी बड़े अद्भुत विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ. हरिदत्तजी शास्त्री, आगरा की क्यों खुशामद कर श्लोकबद्ध शास्त्रार्थ करने के लिए काशी लेकर गए थे। तब यह कह देते, मैं राजेंद्र जिज्ञासु डी.ए.वी. की गुलामी करने

(शेष पृष्ठ १८पर)

(पृष्ठ १७ का शेष)

वाला श्लोकबद्ध शास्त्रार्थ करने में अत्यंत निपुण हूँ। मैंने तीन तार का यज्ञोपवीत पहन रखा है। तब इन विद्वानों की पोपलीला नहीं नज़र आयी? मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप बताएं कि वशिुद्धानंदजी ने सत्यार्थ प्रकाश में कहाँ पर पोपलीला घुसेड़ी है? नहीं, तो मैं तीन तारों वाले यज्ञोपवीतधारियों की कुत्सित निन्दित तथा गहिति नीच लीला का दिग्दर्शन करने को तैयार हूँ। चलिये, मैं अभी वेदनित्यत्व विषय पर ऋग्वेदादा भाष्य भूमिका पढ़ रहा था। उसमें ऋषिजी लिखते हैं-

'यस्य ज्ञानक्रिये नित्ये स्वभाव सिद्धे अनादि स्तः'

इस वाक्य का अर्थ आप कर दीजिए। आपकी सर्वज्ञता के लिए चुनौती है। बताइये, कि जिसका ज्ञान और क्रिया नित्य स्वभाव से सिद्ध और अनादि है, यह वाक्य सही है? ज्ञान और क्रिया नित्य हैं। फिर स्वभाव से सिद्ध और अनादि कहने की क्या आवश्यकता है? क्योंकि जो नित्य है, वह स्वभाव से सिद्ध और और अनादि कहने में क्या तात्पर्य है? आप सर्वज्ञ और आपके अधीन तीन तारों वाले महाविद्वान स्पष्ट कर दें। हमने तो वर्तमान में आपको निन्दित आचार्य विशुद्धानंद की कई बार आर्य समाज नया बाँस में प्रशंसा करते देखा और विद्वानों में बृहस्पति के तुल्य अतिप्रशंसित विद्वान सत्यानन्द वैदिक की चर्चा कर रहे हैं। वह महानुभाव भी इस तरह छह तार वाले गर्हित निन्दनीय आचार्य के पास बैठकर सारे दिन प्रशंसा किये रहते थे। क्या आप दोनों को उनका यह आचरण नजर नहीं आता था? हाथी चला जाता है, कुत्ते भौंकते रहते हैं। लेकिन तुम्हारे भौकने का इलाज करना भी हमें आता है।

अन्त में मैं आपको चेताता हूँ कि स्वयं स्वात्मश्लाघा में सर्वज्ञ बनने का भ्रम मत पालिये। इस भ्रमपूर्ण ज्ञान से अपने अहंभाव की पूर्ति का चरम घोष बी मत मानिये। यह उसी मनुष्य की तरह है, जो रास्ते की मिट्टी पकड़कर मंजिल तक पहुँचने की इच्छा करता है। आपको निराशा ही हाथ लगेगी। कहीं आप ऐसी आग तो नहीं सुलगा रहे हैं, जो स्वयं को जलाकर राख बना देती है। उस आग पर सेंकने को रोटी का आटा भी नहीं होता। ऐसा व्यक्ति अपनी हत्या आप करता है और अपने हाथों अपनी औकात बिना देखे हर किसी पर कलम चलाने की कोशिश को त्याग दें, तो अच्छा होगा। साथ ही हमारा यह निश्चय है कि हम किसी की बी परवाह किये बिना आपके हर लिखे का जो हमसे सम्बंधित होगा, जवाब अवश्य देंगे। (इति)

(पृष्ठ १६ का शेष)

समुद्यत न हो सके। वे कोई आधा घंटा देर करके काम पर आये। स्वामीजी ने उन्हें उपदेश देते हुए कहा- हमारे देश के लोग समय का महत्व नहीं जानते। नियमबद्ध कार्य करना इनके लिए दुष्कर कर्म है। प्रातः से सायं पर्यंत इनके सारे काम अनियमित होते हैं। समय का व्यर्थ खोना इनकी अस्त-व्यस्त अवस्था का एक बड़ा कारण है।

समय कितना मूल्यवान है, इसका ज्ञान उस समय होता है, जब किसी का मरणासन्न प्रिय बन्धु शय्या पर पड़ा होता है और वैद्य आकर कहता है- कि यदि पाँच पल पहले मुझे बुलाया होता, तो मैं इन्हें मरने न देता। चाहे सहस्त्रों रुपये अब खर्च कर डालो, पर अब इसकी आँख नहीं खुल सकती।

६) गोरक्षा होनी जरूरी है - स्वामीजी कुछ दिन शाहजहाँपुर ठहरकर लखनऊ से होते हुए अश्विन सुदी १० संवत १८३६ को फरुखावाद पधारे। इस बार स्वामीजी ने लाला कालीचरण के उद्यान में आसन लगाया। स्वामीजी यहाँ प्रतिदिन भाषण देते और सहस्त्रों मनुष्य सुनने आते। कलेक्टर आदि कर्मचारी भी सम्मिलित हुआ करते और अत्यन्त प्रसन्न होते। उनके भाषणों का प्रभाव वर्णणातीत होता था। एक भाषण में गो-रक्षा के लाभ का वर्णन करते हुए स्वामीजी ने कहा, गो हत्या से इतनी हानि हो रही है, परंतु खेद है कि राजपुरुष इस पर ध्यान नहीं देते। यह दोष अधिक हमारा अपना है। इसमें एकता का सर्वथा अभाव है। यदि मिलकर गो-वध बन्द कराने निवेदन करें, तो क्या नहीं हो सकता? जो लोग गोदान करते हैं, वे भी हानि-लाभ की नहीं सोचते। भोले-भाले भाई समझ लेते हैं कि गो संकल्प करने से ही वैतरणी पार हो जाएंगे। वे तरना मान लेते हैं। बहुत से ऐसे भी लोग होते हैं, जो तुरंत उसे कसाई के हाथ वेच देते हैं।

७) दान समीपस्थ को पहले देना चाहिए- एक दिन दान पर बोलते हुए स्वामीजी ने कहा, अन्न-जल का दान कोई भी भूखा-प्यासा मिले, उसे दे देना चाहिए। ऐसा दान पहले अपने दीन-दुःखी पड़ोसी को देना चाहिए। पास के रहने वाले का दरिद्र दूर करने में सच्ची अनुकम्पा और उदारता का प्रकाश होता है। इससे वाह-वाही नहीं मिलती। इसलिए अभिमानी को भी अवकाश नहीं मिलता।

८) खण्डन क्यों करता हूँ- स्वामीजी ने एक दिन वर्णन किया, अनेक लोग कहते हैं कि आपके खण्डनपरक व्याख्यानों से लोगों में घबराहट उत्पन्न हो जाती है। उनके हृदय भड़क उठते हैं। इसका परिणाम शुभ कैसे होगा? भाई, जब रोग दूर नहीं होता, तो अच्छे वैद्य लोग लम्बे समय से बढ़े हुए दोषों को दूर करने के लिए मल को बाहर निकालने विरेचक औषधियाँ दिया करते हैं। विरेचक औषधि पहले पहल घबराहट उत्पन्न करती है, व्यकुलता लाती है। कभी-कभी उससे मँह भी मचलने लगता है। परन्तु जब विरेचन होकर कुपित दोष शान्त हो जाते हैं, तब प्रसन्नता होती है। धीरे-धीरे वास्तविक पुष्टि प्राप्त हो जाती है। आर्य जाति में अनेक कुरीतियों के दोष मिथ्या-मन्तव्यों के मल बढ़ गये हैं। उनके कारण यह इतनी रुग्ण हो गई है कि लोग इसकी आयु को उंगलियों पर गिनने लगे हैं। हमारे उपदेश आज विरेचक औषधि की भाँति घबराहट अवश्य लाते हैं, परंतु वे जातीय शरीर के संशोधन और आरोग्यप्रद वर्तमान आर्य सन्तान हमें चाहे जो कहे, परंतु भारत की भावी संतान हमारे धर्म सुधार को और हमारे जातीय संस्कार को अवस्यमेव महत्व की दृष्टि से देखेगी। हम लोगों की आत्मिक और मानसिक निरोगता के लिए जो कुरीतियों का खण्डन करते हैं, वह सब कुछ हित-भावना से किया जाता है।

किसी औचित्य की बात करें तो वह भी दूर तक नज़र नहीं आता। जहाँ गुटबाजी, मुकदमेबाजी, स्वेच्छाचारिता, अवसरवादिता, एक–दूसरे को गिराने व धता बताने के षड्यन्त्र, एक दूसरे को निकम्मा, दागदार, दगाबाज, अडंगेबाज सिद्ध करने की कवायद, एक दूसरे को लांछित किये बिना जहाँ नेतागिरी नहीं चलती, जूतियों में खीर बाँटे बिना संतोष नहीं होता, विघटन के बीज बोए बिना पाँचवाँ सवार नहीं बना जा सकता, चुनावी धांधली का ब्रह्मास्त्र चलाये बिना पासा सीधा नहीं पड़ता और संधियों को साथ लिये बिना कोई योजना सिरे नहीं चढ़ती तो वहां यदि आर्यसमाज स्थापना दिवस को स्मरण कर भी लिया जाये तो उसका औचित्य कितना ठहरता है?

अपने जिगर के आधे कफन से अपनी लाज ढांपने वाली गुलाम भारत की एक माँ को देख ऋषि दयानन्द रात भर सो नहीं सके थे, आँसू बहाते रहे थे लेकिन एक हम हैं कि आज देश की आधी आबादी रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय से वंचित है लेकिन हमारी आँखों से किसी के लिए दो बूंद आँसू नहीं टपकते। किसानों की जबरन जमीन हड़पने के लिए सिंगूर व नन्दी ग्राम में बर्बर पुलिस जलियांवाला बाग का मंजर उपस्थित कर जाती है तो हमारे भीतर किसी के प्रति करुणा तो किसी के प्रति क्षोभ तक जागत नहीं होता। करोड़ों बच्चे माँ के पेट से ही बन्धुआ मजदूर बन कर जन्म लेते हैं लेकिन न हमारा दिल पसीजता है और न चेतना में आक्रोश और विद्रोह पैदा होता है। बांध बनाने के नाम पर वनवासी व आदिवासी बन्धुओं को जल, जंगल, जमीन से बेदखल कर दिया जाता है और पुनर्वास के नाम पर बंजर, पथरीली या मरुस्थली जमीन का टुकड़ा उनके सामने फेंक दिया जाता है लेकिन उन्हें उनका हक, अधिकार और न्याय दिलाने को हमारे हाथ नहीं उठ पाते। जब लाचार लोग धर्मांतरण का चोला ओढ़ कर

स्वाधीनता आन्दोलन में आर्य समाज भी सहभागी था लेकिन आज़ाद भारत ने उसकी भूमिका को ठीक उसी तरह भुला दिया जैसे क्रान्तिकारियों और आज़ाद हिन्द सेना की भागीदारी को भुला दिया गया। आर्य समाज ने अपने त्याग और बलिदान की कीमत देश से नहीं मांगी तो क्या उसका इतना भी अधिकार द्वारा आज भी फैल रहा है। आर्यसमाज ने साम्प्रदायिकता और जातिवाद का विरोध–किया, भ्रष्टाचार और नशाखोरी का विरोध किया, शोषण और उत्पीड़न का विरोध किया लेकिन ये सभी बुराइयाँ भारतीय समाज को आज भी खोखला कर रही हैं। तो सवाल उठता है कि वह आर्यसमाज कहाँ है जिसका आज स्थापना दिवस है?

ज्ञातव्य हो कि आज से वर्षों पहले सन् 1970 में आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर ही स्वामी इन्द्रवेश जी और स्वामी अग्निवेश जी ने स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक जी से संन्यास की दीक्षा ली थी। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, नारी उत्पीड़न, शोषण, पाखण्ड सहित समाज को गर्त में ले जाने वाली तत्कालीन समस्याओं के निराकरण के लिए स्वामिद्वय ने आर्य समाज के मंच से वैदिक समाजवाद के माध्यम से आर्य राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया था। वैदिक समाजवाद के माध्यम से 'आर्यराष्ट्र' बनाने के संकल्प को पूर्ण करने के लिए उसी दिन 'आर्यसभा' के नाम से एक राजनीतिक पार्टी का भी गठन किया गया था। पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके आर्यराष्ट्र बनाने के स्वप्न को पूर्ण करने के लिए युवाओं को पूरी ताकत के साथ काम करना पड़ेगा। अमेरिका द्वारा प्रायोजित पूंजीवाद को मिटाने के लिए तथा वैदिक समाजवाद को लाने के लिए आज आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर हमें संकल्प लेना है तथा प्राणपण से युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक सभी नीतियों को समाज में लागू करने के लिए प्रयत्नशील होना है।

स्वामी अग्निवेश जी

स्वामी इन्द्रवेश जी

"आर्य राष्ट्र बनायेंगे, पूंजीवाद मिटायेंगे" स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी अग्निवेश जी के इस नारे की गूँज को गूँजाते हुए समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, शोषण, पाखण्ड के विरूद्ध एकजुट होकर देश और दुनिया से इन बुराईयों को मिटाने के लिए कृत संकल्पित हों तभी हमारा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाना सार्थक हो सकेगा।

नोट : 14 अप्रैल को बाबा साहब अम्बेडकर जन्मदिवस मध्यान्ह 3.00 से 5.00 बजे तक सार्वदेशिक सभा कार्यालय के सभागार में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा, आप सबकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

का शिकार होकर बिखर गया। कौरव तो अपनी कर्मगति का शिकार हुए लेकिन पाण्डवों की एकता व विजय को कारगर बनाने के लिए कष्ण सफल हो गये। क्या ऐसा कोई कष्ण आर्यसमाज को कभी नहीं मिलेगा? कष्ण तो कई हैं लेकिन हम ही पाण्डवों की भूमिका में न रह कर दुर्योधन और शकुनि की चालों का शिकार बने हुए हैं तो आर्यसमाज स्थापना दिवस पर उसके उद्धार की बात किस सिरे से शुरू हो सकेगी?

११ अप्रैल को आर्यसमाज स्थापना दिवस है, इतना तो हमें भी स्मरण है लेकिन उसे मनाने के लिए जो परिवेश चाहिएँ, जो साधन चाहिए, जो आत्म–बल चाहिए, जो एकता व भाईचारा चाहिए, गर्व करने को जो उपलब्धियाँ चाहिएँ, वह सब कहाँ हैं? ये सब इसलिए नहीं हैं क्योंकि हमने साधना का पथ त्याग दिया है, अध्यात्म का रास्ता छोड़ दिया है, संध्या, सत्संग, स्वाध्याय को जीवन से निर्वासित कर दिया है, करुणा, संवेदना, परोपकार के भाव इस पाषाण हृदय में अब पैदा नहीं होते, यदि कुछ बचा है तो वह है दिखावा, प्रदर्शन, औपचारिकता, रीति–रिवाज का निर्वहण भर जिसका न ओर है न छोर है, जिसकी न कोई जड़ है, न औचित्य है, जिसकी न मर्यादा है न कोई अर्थ है।

बन्धुवर ! तनिक सोचिए कि आखिर यह तमाशा कब तक चलता रहेगा और हम मौन–भाव से इस तमाशे को आखिर कब तक यों ही देखते रहेंगे? आर्यसमाज की इस दयनीय स्थिति से हमें निराश तो कदाचित नहीं होना चाहिए बल्कि जाग कर, उठ कर यथास्थितिवाद से इसे मुक्त कराना होगा। यह कार्य सत्ता परिवर्तन से नहीं व्यवस्था परिवर्तन से ही सिद्ध होगा जिसके लिए हमें मानसिक रूप से अपने को तैयार करना होगा।

RNI.No.52990/93 Reg. No. HD / 783 / 2012-14 12-04-2013 आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆంధ్రప్రదేశ్, 4 - 2 - 15 మహర్షి దయానంద మార్గము
సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్ - 500 095
ఫోన్ : 040 - 24753827, 66758707, Fax:24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

प्रो. विठ्ठलराव आर्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री निर्वाचित

चित्र में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेशजी

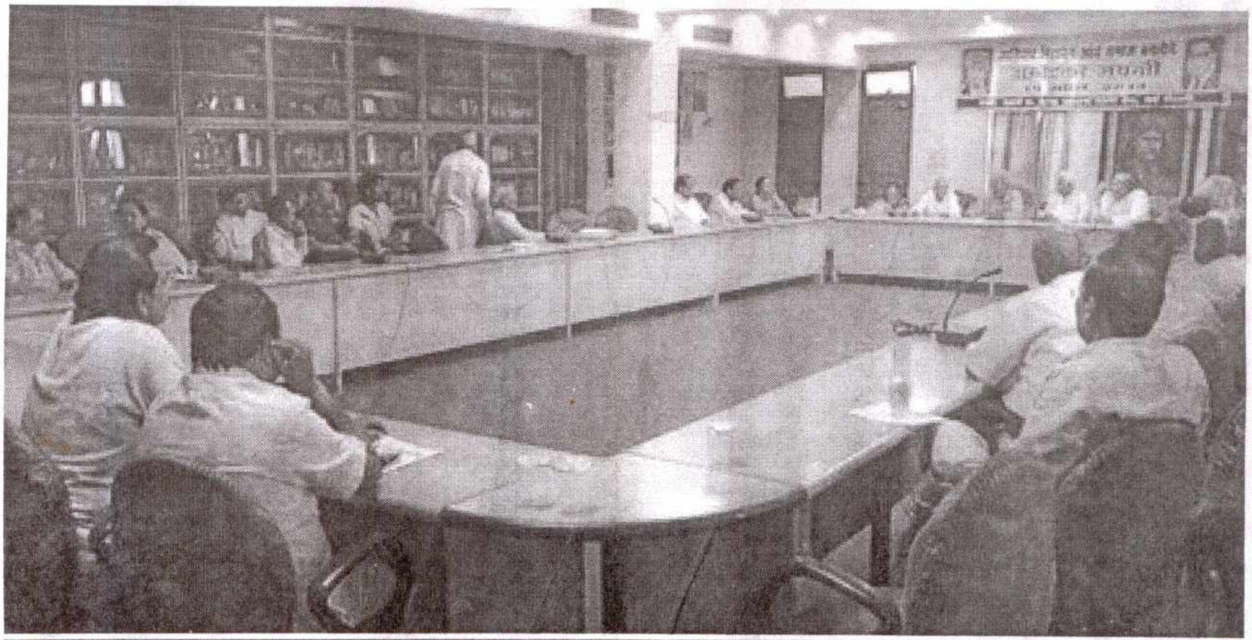

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUEMAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

संपादक: श्री विठ्ठल राव आर्य प्रधान (20) सभा ने सभा की ओर से
कलांजली प्रेस विठ्ठलवाडी में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.सु.बाज़ार,हैदराबाद